ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 25 कुल पृष्ठ-12 12 से 18 दिसम्बर, 2024 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि सम्वत् 1960853125 सम्वत् 2081 मा. शु.-12

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल तथा अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति में हरियाणा के जीन्द में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज देश में एक सजग प्रहरी की भूमिका निभाता है – प्रो. विट्ठलराव

महान समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती तथा अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल व स्वामी श्रद्धानंद जी की स्मृति में दिनांक 8 दिसम्बर, 2024 को स्वामी दयानन्द पार्क, जीन्द (हरयाणा) में प्रांतीय आर्य महासम्मेलन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। महासम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा संयोजन प्रांतीय नशाबंदी परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने किया। सम्मेलन में विशेष रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव, उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व गन्ना मंत्री स्वामी ओमवेश जी, हरियाणा नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या, संयोजक बहन प्रवेश आर्या, श्री रणधीर सिंह रेढू एडवोकेट, श्री अशोक वर्मा प्रधान आर्य समाज सिरसा, श्री सुभाष श्योराण निदेशक इण्डस ग्रुप ऑफ स्कूल्स आदि सहित अनेकों गणमान्य महानुभावों ने सम्मेलन में अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य एवं श्री सुनील शास्त्री ने भी अपने भजनों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध किया। महासम्मेलन को प्रान्तीय नशाबंदी परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी का विशेष सान्निध्य प्राप्त रहा तथा मंच का संचालन श्री जगफूल सिंह ढिल्लों ने किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान में स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डालते कहा कि स्वामी बिरजानन्द और स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ आदि अनेक बलिदानियों ने भारत को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करके हमें जो आजादी सौंपी थी उसे हम आज 75 वर्ष के उपरान्त भी क्रांतिकारियों सपनों के अनुसार संरक्षित नहीं कर पाये। आज आवश्यकता है कि हम महर्षि के सिद्धान्तों से जन–जन को अवगत करायें। आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को आर्य समाज की विचारधारा तथा महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों पर चलते हुए राष्ट्र की सेवा करने के लिए तन–मन–धन से आगे आना चाहिए। जब देश के युवा आर्य समाज संगठन से जुड़ेंगे तभी हम अपनी बात को जोरदार तरीके से पूरे समाज में फैला सकेंगे। स्वामी आर्यवेश जी ने हरियाणा में नशामुक्ति अभियान की घोषणा की और कहा कि सरकार द्वारा चलाये जा रहे नशामुक्त हरियाणा का कार्यक्रम अधूरा है। सरकार केवल मादक पदार्थों (ड्रग्स) को ही नशे में शामिल कर रही है, जबकि हरयाणा में शराब का प्रचलन व प्रभाव अन्य मादक पदार्थों से कहीं ज्यादा है। शराब निरन्तर समाज के सभी वर्गों और सभी आयु के लोगों में तीव्र गति से बढ़ती जा रही है जिसके कारण परिवार टूट रहे हैं तथा दुर्घटनाएं, मुकदमें तथा अन्य अपराध बढ़ते जा रहे हैं। अतः आर्य समाज यह मांग करता है कि नशामुक्त अभियान में ड्रग्स के साथ–साथ शराब को भी शामिल किया जाये। स्वामी जी ने हरियाणा में पूर्ण शराबबन्दी की मांग की और इसके लिए आगामी मार्च के महीने तक प्रदेश के प्रत्येक गांव में शराबबन्दी समितियों का गठन करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जो लोग हरियाणा को नशामुक्त बनाना चाहते हैं वे स्वतः आगे आयें और आर्य समाज के साथ मिलकर नशा मुक्ति अभियान में शामिल हों। अपने–अपने गांव, मोहल्ले, कस्बे तथा नगरों में नशाबन्दी परिषद् का गठन करके कार्य करना प्रारम्भ करें और इसके लिए मोबाईल नम्बर – 9013783101, 9354840454, 7015259713 पर सम्पर्क करें। स्वामी आर्यवेश जी ने युवा वर्ग से अपील की कि वे समाज में बढ़ती हुई अश्लीलता, नग्नता, कामुकता, अपराध, अपहरण, बलात्कार, दुराचार एवं हिंसा से युक्त फिल्मों एवं गूगल आदि पर परोसी जा रही दूषित सामग्री का बहिष्कार करें। आर्य समाज इस सम्बन्ध में राष्ट्र व्यापी अभियान चलायेगा। स्वामी जी ने यह भी आह्वान किया कि प्रत्येक गांव में आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज तथा आर्य युवक परिषद् का गठन करके बढ़ते हुए धार्मिक अन्धविश्वास, पाखण्ड, जातिवाद, नशाखोरी, महिला उत्पीड़न आदि समस्याओं के विरुद्ध जन–जागरण अभियान चलाया जायेगा।

हैदराबाद से पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री शेष पृष्ठ 12 पर

शिक्षा में हिन्दी के प्रस्तोता : स्वामी श्रद्धानन्द

– पं. प्रकाशवीर शास्त्री

हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी का रजत जयन्ती समारोह चल रहा था। गांधी जी भी उसमें भाग लेने पधारे। आए थे यह सोचकर कि जो विश्वविद्यालय काशी में हैं वहां तो हिन्दी और संस्कृत का बोलबाला होगा ही। पर जब गांधी जी ने चारों ओर वहां अंग्रेजी का साम्राज्य देखा तो तिलमिला उठे। विश्वविद्यालय के संस्थापक मालवीय जी को देखकर बोले, 'महामना! यह बच्चे तो गंगा किनारे बैठकर टेम्स का पानी पी रहे है।' अपने इसी भाषण में गांधी जी ने कहा–लोग मुझे महात्मा कहते हैं पर मैं महात्मा नहीं हूँ। महात्मा तो आर्य समाज के नेता स्वामी श्रद्धानन्द हैं जो गंगा के किनारे हरिद्धार में बैठकर हिन्दी के माध्यम से गुरुकुल के विद्यार्थियों को शिक्षा दे रहे हैं।

स्वाधीन भारत में अभी तक भी अंग्रेजी हवाओं में पले कुछ लोग यह कहते मिलेंगे– जब तक विज्ञान तकनीकी ग्रन्थ हिन्दी में न हों तब तब कैसे हिन्दी में उच्च शिक्षा दी जाये। जबकि स्वामी श्रद्धानन्द स्वाधीनता से भी चालीस साल पहले गुरुकुल कांगड़ी में हिन्दी के माध्यम से विज्ञान जैसे गहन विषयों की शिक्षा दे रहे थे। ग्रन्थ भी हिन्दी में थे और पढ़ाने वाले भी हिन्दी के थे। जहां चाह होती है वहीं राह निकलती है। एक लम्बे अरसे तक अंग्रेज गुरुकुल कांगड़ी को भी राष्ट्रीय आन्दोलन का अभिन्न अंग मानते रहे। इसमें कोई सन्देह भी नहीं गुरुकुल के स्नातकों में स्वाधीनता की अजीब तड़प थी। स्वामी श्रद्धानन्द जैसे राष्ट्रीय नेता जिस गुरुकुल के संस्थापक हो और हिन्दी शिक्षा का माध्यम हो वहां राष्ट्रीयता नहीं पनपेगी तो कहां पनपेगी। स्वामी जी से मिलने देश के प्रमुख नेता भी गुरुकुल आते रहे थे। दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद जब मोहनदास कर्मचन्द गांधी पहली बार गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव में पधारे तब स्वामी श्रद्धानन्द ने ही उन्हें महात्मा की उपाधि प्रदान की। तब से ही गांधी जी महात्मा गांधी कहलाने लगे।

राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के मंच पर भी प्रारम्भ में तो तीन–चार दशाब्दियों तक अंग्रेजी का ही दबदबा रहा। भाषण–प्रस्ताव और चर्चाओं में अंग्रेजी छाई रहती थी। पर जब १९१९ में अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन हुआ और स्वामी श्रद्धानन्द उसके स्वागताध्यक्ष बनाये गए तब पहली बार कांग्रेस के मंच पर हिन्दी सुनने को मिली। स्वामी जी ने वेद मन्त्र पढ़कर जब अपना भाषण हिन्दी में दिया तब वहां बैठे किसी नेता ने कहा– आज लगता है हम भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में बैठे हैं। कांग्रेस अधिवेशन से पहले अमृतसर के जलियांवाला बाग में ऐतिहासिक नरमेध होकर चुका था जिसकी याद भी आज रोंगटे खड़े कर देती है। लोगबाग इतने डरे हुए थे कि कोई हिम्मत कर के तैयारियों में आगे लगने को उद्यत नहीं हो रहा था। सब ने आखिर में एक स्वर में यह तय किया– स्वामी श्रद्धानन्द यदि इस अधिवेशन की बागडोर अपने हाथों में ले लें तब ही बात बन सकती है। अमृतसर कांग्रेस के चार वर्ष बाद स्वामी जी अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी निर्वाचित हुए।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी स्वामी जी का अमर स्मारक है। प्रारम्भ में जब उन्होंने हरिद्वार में गंगा के किनारे पर गुरुकुल की नींव डाली तो अधिकांश व्यक्ति स्वामी जी के प्रयास की सफलता में संदेह कर रहे थे। कुछ तो कहते थे– भला कौन अपने बालकों को इन जंगलों में लाकर साधु बनाएगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का वेश भी उन दिनों कुछ ऐसा ही था। सबको वहां नंगे पैर, नंगे सिर रहना पड़ता था और पीले खद्दर के कपड़े पहनना अनिवार्य था पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सबसे पहले अपने ही दो पुत्र हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल में ब्रह्मचारी बनाया। आगे चलकर वह ही पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति दिल्ली के सुप्रसिद्ध पत्रकार और राजनीतिकनेता बने। हरिश्चन्द्र जी स्नातक बनने के कुछ दिन बाद विदेशों में स्वाधीनता की अलख जगाने चले गए।

एक ऐसा भी समय रहा जब लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, चौधरी रामभजदत्त और श्री घनश्याम सिंह गुप्त आदि आर्य समाज के नेता राष्ट्रीय आन्दोलन के मंच पर भी वैसे ही सक्रिय थे जैसे आर्यसमाज में। उन दिनों स्वातन्त्र्य संघर्ष व आर्यसमाज का संगठन द्वितीय रक्षा पंक्ति का काम कर रहा था। समाज सुधार के साथ–साथ राजनीतिक चेतना जगाने में आर्यसमाज के नेताओं का योगदान आसानी से नहीं भुलाया जा सकेगा। हिन्दी, हरिजन समस्या का समाधान और खादी तीनों के लिए आर्यसमाज अर्पित सा हो गया था। मालवीय जी कट्टर सनातनधर्मी थे और स्वामी जी कट्टर आर्यसमाजी। लेकिन राजनीतिक और सामाजिक सुधारों में दोनों एक थे। हिन्दू समाज को रूढ़ियों से उबार कर एक सशक्त समाज बनाने की उनकी कल्पना थी। प्रारम्भ में गांधीजी के साथ कई प्रश्नों पर उन दोनों का मतभेद भी रहा। पर बाद में गांधी जी को जब उन्होंने सारी स्थिति समझाई और अन्य स्रोतों से भी गांधी जी ने उसकी वास्तविकता की जानकारी ली तो स्वामी जी की दूरदर्शिता के कायल हो गए। दिल्ली में जब स्वामी जी का बलिदान हुआ तब गोहाटी में उसी समय अखिल भारतीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन चल रहा था। स्वामी श्रद्धानन्द की मृत्यु का समाचार सुनते ही अधिवेशन स्थगित कर दिया गया। शोक प्रस्ताव पर बोलते हुए अपने भाषण में गांधी जी ने कहा था– काश! यह शानदार मौत मुझे भी मिली होती।

समाज सुधार आन्दोलन को भी इस निर्भीक संन्यासी से नई दिशा मिली। हरिजन समस्या के समाधान में तो कई स्थानों पर संघर्ष का भी सामना करना पड़ा। गुरुकुल कांगड़ी के छात्रावासों और भोजनालयों में बिना किसी भेदभाव के हर जाति के विद्यार्थी रहते और खाते–पीते थे।

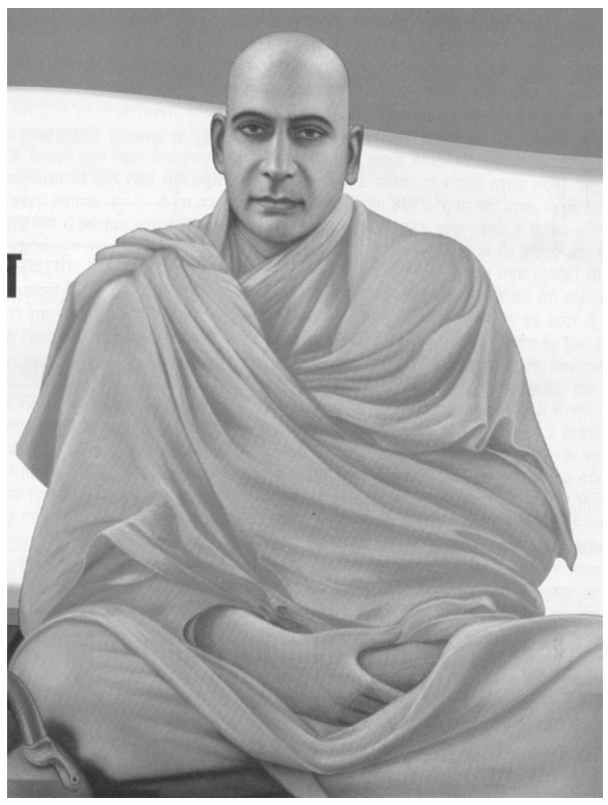

स्वामी जी का कहना था मनों में छुआछूत की भावना मिटाने में आवासीय शिक्षण संस्थाओं का अच्छा योगदान रह सकता है। चौबीसों घंटे एक साथ मिलकर जब वह रहेंगे, खेलेंगे–कूदेंगे और पढ़ेंगे–लिखेंगे तो कहां तक छूत–अछूत की दीवार खड़ी रह जाएगी। आजादी के बाद भी यदि इसी रास्ते को पकड़ा गया होता तो मंजिल बहुत पहले तय हो जाती। आवासीय पद्धति पर आश्रित ऐसे गुरुकुल उन्होंने हरियाणा में इन्द्रप्रस्थ और कुरुक्षेत्र, गुजरात में सोनगढ़ और सूपा में भी खोले। देहरादून का कन्या गुरुकुल भी उसी शृंखला की कड़ी है।

सदियों की दासता के बाद रूढ़ियों का शिकार हिन्दू समाज कुछ समय तक तो बिल्कुल ही छुई–मुई बन गया था। किसी हरिजन से सवर्ण हिन्दू का स्पर्श हो गया तो बिरादरी से बाहर। किसी हरिजन के कुएँ से किसी सवर्ण हिन्दू ने पानी पी लिया तो बिरादरी से बाहर। किसी की चारपाई पर भूल से कोई बैठ गया तो बिरादरी से बाहर। बंगाल में तो किसी मुस्लिम नवाब के दरबार में नाक तक में भोजन की गन्ध जाने से ही 'घ्राणं अर्ध भोजनम्' सूंघना भी आधा भोजन होता है, की व्यवस्था देकर एक कुलीन और सम्भ्रान्त परिवार को जातिच्युत कर दिया गया। बाद में उसी की शाखा–प्रशाखायें जहां–तहां निकल–निकल कर पूरे बंगाल में फैल गई। उसकी परिणति किस रूप में १९४७ में हुई इसकी विस्तार से यहां चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दू समाज की इस कमजोरी को भी सहारा दिया। जो व्यक्ति अथवा परिवार हिन्दू समाज की इस संकुचित भावना का शिकार हो गये थे उनको समाज में फिर से वह ही पुराना सम्मानित स्थान देकर अपने उदार हृदय और दूरदर्शिता का परिचय दिया। कुछ लोग जो हिन्दू समाज की इस कमजोरी का लाभ उठा रहे थे उन्हें तो इससे ठेस पहुँचनी स्वाभाविक थी। अली बन्धुओं को आगे करके गांधी जी से इसकी शिकायत भी की गई। पर स्वामी जी ने गांधी जी से स्पष्ट कह दिया– ''स्वाधीनता के आन्दोलन को मेरे इस व्यवहार से कुछ भी क्षति पहुँचती है तो मुझे आप छोड़ दें। लेकिन जो लोग स्वयं तो तबलीग की बातें करें और हरिजनों को हिन्दू–मुसलमानों में आधा–आधा बांटने का सुझाव दें और मुझे अपने ही भाइयों को गले लगाने से रोकें यह श्रद्धानन्द के लिए संभव नहीं है। मैं तो राष्ट्र की एकता का ही एक आवश्यक भाग उसे मानता हूँ।''

राष्ट्रीय मुसलमानों का एक वर्ग जो स्वामी जी को निकट से जानता था वह उन हलकी बातों से कभी प्रभावित नहीं हुआ। हकीम अजमल खां, डाक्टर अन्सारी और दिल्ली के दूसरे इसी तरह के राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में दिल्ली में कन्धे से कन्धा लगाकर आजादी का आन्दोलन चला रहे थे। तीस मार्च का वह दिन जब दिल्ली में चांदनी चौक के घंटाघर पर स्वामी जी आजादी के दीवानों का एक विशाल जुलूस लेकर जा रहे थे, हिन्दू–मुसलमान सभी उसमें शामिल थे। लालकिले की ओर अंग्रेजों की सैनिक टुकड़ी रास्ता रोके खड़ी थी और फतेहपुरी की ओर से समुद्र की तरह ठाठें मारता हुआ यह जुलूस आगे बढ़ रहा था। घंटाघर पर सैनिकों ने जुलूस को रोकने के लिए इधर अपनी संगीनें संभाल लीं। उधर स्वामी जी ने अपनी कमीज के बटन खोलकर सीना तान लिया और कहा–हिम्मत है तो चलाओं गोली। स्वामी जी की इस निर्भीकता पर सेना के जवान हक्के–बक्के रह गये और करें तो क्या करें। जुलूस के लोग भी स्वामी जी के इस दृढ़ निश्चय पर आज कुछ कर गुजरने को आमादा थे। उनका कहना था– स्वामी जी को गोली तो बहुत दूर की बात है किसी ने हाथ भी लगा दिया तो आज यहां लाशें बिछ जाएंगी। अब तो उस दृश्य की कल्पना करना ही कठिन है। आखिर में फिर अंग्रेज अधिकारी को सद्बुद्धि आ गई और सिपाहियों को अपनी बन्दूकें नीची करनी पड़ीं।

बरसों तक स्वामी श्रद्धानन्द दिल्ली के बेताज बादशाह माने जाते थे। उनके संकेत दिल्ली वालों के लिए आदेश का काम करते थे। दिल्ली में चार अप्रैल का वह दिन भी एक ऐतिहासिक दिन ही था जब दिल्ली की जामा मस्जिद के तख्त पर खड़े होकर स्वामी जी ने भाषण दिया। 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो!'' यह वेद मन्त्र पढ़कर स्वामी जी ने अपनी सिंह गर्जना की तो घन्टों तक टकटकी लगाये लोग स्वामी जी का भाषण सुनते रहे। स्वामी जी पहले गैर मुस्लिम थे जिन्हें मुसलमानों ने यह सम्मान दिया। संन्यास लेने के बाद तो उनका रुतबा इतना ऊँचा उठ गया था जो कहीं उनके कदम पड़ने को भी धन्य माना जाता था। स्वामी जी को हिन्दू– मुसलमान दोनों अपना रहनुमा मानते थे। दोनों ही उनका पैगाम सुनने को उतावले रहते थे। पर उसी दिल्ली में एक पागल मुसलमान ने स्वामी जी जब निमोनिया से बीमार थे तो पिस्तौल दागकर उन्हें शहीद कर दिया। स्वामी जी से कुछ प्रश्न पूछने को वह गया था। उनके सेवक को 'मुझे प्यास लगी है' यह कह कर बाहर पानी लेने उसने भेज दिया। मौके का लाभ उठाकर रुग्ण संन्यासी की छाती उस पागल ने गोलियों से छलनी कर डाली। कुछलोग इस बलिदान का लाभ उठाकर दिल्ली में साम्प्रदायिक हवा फैलाना चाहते थे। पर दिल्ली वालों ने उस समय बड़ी समझदारी और धैर्य से काम लिया। दिल्ली के इतिहास में दो अभागे दिन ऐसे आये हैं जब पारस्परिक सद्भाव और धैर्य की कठोर परीक्षा दिल्ली के नागरिकों ने दी है। एक दिन वह जब स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हुआ और दूसरा दिन जब महात्मा गांधी का बलिदान हुआ। इसमें बदला लेने की हल्की–सी चिन्गारी भी रुई में आग का काम कर सकती थी। पर जिस महान् लक्ष्य को लेकर वह दोनों चले थे उसके सर्वथा विपरीत वह बात हो जाती। यों भी महापुरुषों का तप और त्याग उनके पीछे वातावरण को संभालने में बड़ी मदद करता है। हिंदू–मुसलमान दोनों के हृदयों पर उनकी राष्ट्रीय सेवाओं की छाप थी उससे वह सदा–सदा के लिए अमर हो गए।

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी – स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ० धर्मपाल आर्य

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म पंजाब के तलवन नामक गाँव में २३ फरवरी १८५७ को हुआ था। उनका पहला नाम बृहस्पति था, परन्तु बाद में उन्हें मुंशीराम कहा जाने लगा। १९१७ में संन्यास के बाद उनका नाम स्वामी श्रद्धानन्द हुआ। उनके पिता नानकचन्द थे। उनकी शिक्षा–दीक्षा बनारस और लाहौर में हुई। उनका विवाह श्रीमती शिवदेवी से हुआ जो ३५ वर्ष की अवस्था में अपने दो पुत्रों तथा दो पुत्रियों को छोड़कर चल बसी। मुंशीराम नायब तहसीलदार बने। उन्होंने इस नौकरी को छोड़कर फिल्लौर में और बाद में जालंधर में वकालत शुरू कर दी। यहां भी उनका मन नहीं लगा और वे स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज के क्षेत्र में प्रवृत्त हुए। उन्होंने ४ मार्च १९०२ को वैदिक ऋषियों के आदर्शों के अनुरूप, राष्ट्र के लिए समर्पित नवयुवक तैयार करने के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। दक्षिण अफ्रीका से लौटकर महात्मा गांधी गुरुकुल कांगड़ी में आए। महात्मा मुंशीराम से उनका मेलजोल बढ़ा और वे भी देश को स्वाधीन कराने की राह पर चल पड़े। मोहनदास कर्मचन्द गांधी को उन्होंने महात्मा की उपाधि से विभूषित किया। १९१७ में वे संन्यासी हो गए। वे दिल्ली आकर रहने लगे, यहां उन्होंने दलितों और अनाथों के लिए संस्थाएँ बनायी। यहां से उर्दू में 'तेज' और हिन्दी में 'अर्जुन' नामक समाचार पत्र निकाला। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हड़तालों तथा धरना–प्रदर्शनों का आयोजन किया। रौलट एक्ट का विरोध किया। सैनिकों की संगीनों का छाती तानकर सामना किया। जामा मस्जिद से व्याख्यान देने वाले वे पहले और आखिरी हिन्दू थे।वे हिन्दुओं तथा मुसलमानों सभी के रहनुमा थे। उनका जीवन त्याग और तपस्या से परिपूर्ण था। उन्होंने २३ दिसम्बर १९२६ को अन्तिम साँस ली। भारत सरकार ने उनकी स्मृति में ३० मार्च १९७० को एक डाक टिकट जारी किया था। शताब्दी वर्ष २००२ में भारत सरकार ने गुरुकुल कांगड़ी पर भी डाक टिकट जारी किया।

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रयास से जलियांवाला बाग काण्ड के बाद अमृतसर में कांग्रेस का महाअधिवेशन हुआ था। उसमें कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता उपस्थित थे। पं० मोतीलाल नेहरू और महामना मदनमोहन मालवीय उस समय कांग्रेस के अग्रणी कार्यकर्त्ता थे। स्वामी श्रद्धानन्द उस समारोह के स्वागताध्यक्ष थे। स्वामी जी ने उस समय देशवासियों को चार परामर्श दिए थे–

१. केवल इतनी आवश्यकता है कि आर्य लोग अपने आचरण को उत्तम बनाकर दीपक बनें ताकि उनसे दूसरे दीपक जलाए जा सकें।

२. सभी प्रान्तों में मैंने देखा है कि हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे पर संदेह करने लगे हैं, किन्तु मुसलमान और सिख तो सामाजिक दृष्टि से संगठित हैं, किन्तु हिन्दू सामाजिक दृष्टि से बिखरे हुए हैं। मेरी सम्मति में इसका उपाय एक ही है कि हिन्दू नेता हिन्दू समाज को सामाजिक दृष्टि से संगठित करें और मुसलमान नेता खिलाफत की अपेक्षा स्वराज की प्राप्ति पर अधिक ध्यान दें।

३. यदि देश और जाति को देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्त्ति बनकर अपनी सन्तान में सदाचार की बुनियाद रखें। जब सदाचारी ब्रह्मचारी शिक्षक हों और कौमी हो शिक्षा पद्धति, तब ही कौम की जरूरत पूरी करने वाले नौजवान निकलेंगे, अन्यथा अपनी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बनकर रहेगी।

४. ईसाई मुक्ति फौज भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार दिलाने के लिए प्रयत्नशील है, क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश सरकार के जहाज के लिए लंगर के समान हैं। आज से ये साढ़े छः करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहे, बल्कि हमारे भाई–बहन हैं, हमारे पुत्र–पुत्रियाँ हैं– उन्हें मातृभूमि के प्रेम जल से शुद्ध करो, उन्हें पाठशालाओं में पढ़ाओं। उनके गृहस्थ नर–नारियों को अपने सामाजिक व्यवहार में सम्मिलित करो।''

स्वामी जी महाराज ने ये चार परामर्श दिए थे। ये भारतीयता की रक्षा के इतिहास में, भारतीय गौरव की पुनः स्थापना के इतिहास में तथा वैदिक धर्म के प्रसार के इतिहास में, प्रकाश–स्तम्भ के समान हैं, पहली बात में उन्होंने सम्पूर्ण आर्यजाति का आह्वान किया है कि वे दीपक के समान तेजस्वी हों। वे दीपक के समान मार्गदर्शक हों। वे दीपक के समान अपने आप को तिल–तिल करके होम कर देने वाले हों। निश्चय ही उनका अपना जीवन दीपक था। उन्होंने दूसरों को मार्ग दिखाया उन्होंने अपने आपको दीपक के समान जला दिया। उन्होंने देश और जाति की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर दिया। उन्होंने तो सर्वमेध यज्ञ किया था। वे प्रारम्भिक जीवन में क्या थे, सभी जानते हैं, पर आगे चलकर उन्होंने अपने आपको कितना आचारवान् बनाया, यह किसी से भी छिपा नहीं है। वे सार्वजनिक जीवन के व्यक्ति थे। सार्वजनिक व्यक्ति का कोई

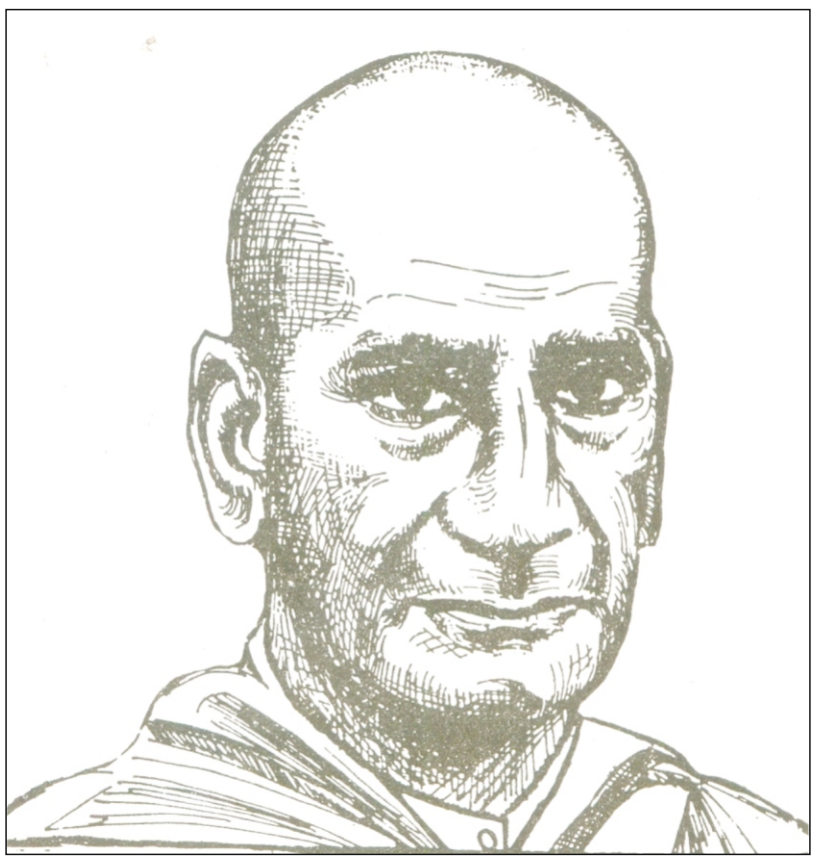

व्यक्तिगत जीवन नहीं होता। उसका तो एक–एक क्षण सबके सामने होता है। उसका कोई भी कार्य अपने लिए नहीं होता। उसके सभी कार्य दूसरों के लिए होते हैं। उसका जीवन स्वच्छ, दर्पण के समान आभासमान होता है। संस्थाओं के सर्वोच्च अधिकारियों को उनके जीवन से शिक्षाग्रहण करनी चाहिए। उन्हें सदाचारी बनना चाहिए। उन्हें प्रकाशस्तम्भ बनना चाहिए।

स्वामी जी महाराज ने हिन्दू जाति के संगठन के बात कहीं है। यह बात आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। यदि हमें कुछ पाना है, अपने राष्ट्र का उद्धार करना है, अपनी जाति को प्रगति के संगठित होना ही होगा। संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्। यह नाद गुंजाना ही होगा। इसे क्रियान्वित करना ही होगा। आज मेरे अनेक भाई छोटे–छोटे विवादों में फंसे हैं। वे उस बृहद् उद्देश्य को भूल चुके हैं जो ऋषि ने हमें बताया था, जिस मार्ग पर स्वामी श्रद्धानन्द चले थे।

संगठनात्मक दृष्टि से आज भी सुदृढ़ता की आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द एक शहीद की मौत मरे। हर किसी की कामना हो सकती है कि वह शहीद की मौत मरे, पर शहीद वही होता है जो किसी उद्देश्य के लिए अपने को न्योछावर करे। स्वामी श्रद्धानन्द ने उसी संगठनात्मक सुदृढ़ता और एकता के लिए अपने जीवन का बलिदान किया। वह तो वीर पुरुष थे। वे वीरता की ही मृत्यु को प्राप्त हुए। कायर लोग अपने जीवन में अनेक बार मरते हैं। वे जब भी डरेंगे, तभी मरेंगें, परन्तु बहादुर लोग अपने जीवन में केवल एक बार मृत्यु का वरण करते हैं। वे वीर बहादुर ही सदा याद किए जायेंगे, जो निर्भीक होंगे, अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होंगें। ऐ मेरे प्यारे आर्य भाइयो ! आप उठ जाओ, आगे बढ़ो, अपने लक्ष्य को प्राप्त करो। अपने को देश और जाति पर बलिदान करने के लिए आगे आओ।

स्वामी जी ने अपनी संतान को सदाचारी बनाने की बात कहीं है। 'जनया दैव्यम् जनम्' यह वेद का आदेश है। स्वयं सदाचारी बनो, अपनी सन्तति को सदाचारी बनाओ। अपनी सन्तति को अपने से भी अच्छा बनाओ। पिता पुत्रात् पराजयेत् स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति के माध्यम में ऐसे ही वीरों के निर्माण की बात अपने मन में सोची थी। उनका सपना सच हुआ। गुरुकुल के सैकड़ों स्नातकों ने अपने–अपने क्षेत्र में नए–नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। स्वामी श्रद्धानन्द अपने दोनों पुत्रों– हरिश्चन्द्र और इन्द्रचन्द्र को लेकर गंगा के किनारे बीहड़ जंगल में चले गये थे। वहीं पर उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा–पद्धति के अपने सपने को साकार किया। उन्होंने भारतीय इतिहास एवं दर्शन की उन्हें शिक्षा दी। आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की उन्हें शिक्षा दी। सदाचार की उन्हें शिक्षा दी। उन्हें अपने देश पर बलिदान होने की शिक्षा दी। उन्हें वीरत्व एवं निर्भीकता प्रदान की। गुरुकुल का विद्यार्थी 'भय' करना नहीं जानता। वह तो साक्षात् 'वीरता' है। स्वामी श्रद्धानन्द तो कर्मशूर भी थे। उन्होंने जो कहा, वह करके दिखाया। वे केवल भाषण तक सीमित नहीं थे। आज के भाषणकर्त्ताओं का प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि उनकी कथनी और करनी में अन्तर होता है। असली प्रभाव उसी का पड़ता है जो जैसा कहता है वैसा ही करता भी है। सत्य का उपदेश करने वाले को सत्यवादी होना चाहिए। कर्म का उपदेश करने वाले को कर्मशील होना चाहिए। संयम का उपदेश करने वाले को संयमी होना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द में ये सभी गुण विद्यमान थे। आप अपनी सन्तान को सदाचारी बनाएं, उन्हें देश और जाति पर गर्व करने वाला बनाएं, उन्हें नित्य संध्या और अग्निहोत्र करने वाला बनाएं, उन्हें नित्य स्वाध्याय करने वाला बनाएं, तभी देश और जाति की रक्षा हो सकती है। आज के विषाक्त वातावरण में सदाचारी लोगों की आवश्यकता है।

स्वामी श्रद्धानन्द का चौथा परामर्श वास्तव में एक चेतावनी है। धर्मान्तरण उस समय भी हो रहा था आज भी हो रहा है। देश के गरीब लोगों को ईसाई बनाया जा रहा था, आज भी बनाया जा रहा है। उन्हें आज मुसलमान भी बनाया जा रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय में एक टीस थी। इसीलिए उन्होंने दलितोद्धार सभा बनायी। इसीलिए उन्होंने शुद्धि सभा बनाई। वे नहीं चाहते थे कि धर्मान्तरण हो। आर्य समाज ने धर्म रक्षा महाभियान चलाया। आर्य समाज ने समझाया कि वैदिक धर्म की सर्वश्रेष्ठ धर्म है। दलितोद्धार का मूल मंत्र है कि सभी को समानता का अधिकार दिया जाए। सभी जगह समता सम्मेलन आयोजित किए जाएं। जब सभी को समान सम्मान मिलेगा, ऊँच–नीच का भेद समाप्त हो जाएगा, जातीयता का भेद समाप्त हो जाएगा, सभी को समान अवसर मिलेंगे तो स्वतः ही धर्मान्तरण का चलन समाप्त हो जायेगा। इस कार्यक्रम को वास्तविक व्यवहार में लाने की आज भी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि स्वामी श्रद्धानन्द के समय थी।

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाने की सार्थकता इसी बात में है कि भारतवासी उनके सच्चे अनुयायी बनें। अपनी सन्तान को आर्य बनायें, सभी को गले लगाएं, अपनी भाषा का प्रयोग करें, मद्यादि व्यसनों से दूर रहें तथा गोरक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार हों।

–ए/एच-१६, शालीमार बाग, दिल्ली-११००८८
दूरभाषः ०११-२७४७२०१४, २७४७१७७६

स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ. महावीर

संस्कृत के नीतिकारों ने महात्माओं और दुरात्माओं का अन्तर निरूपित करते हुए कहा है-

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।

मनस्यन्त् वचस्यन्यद् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।।

अर्थात् मन, वचन और कर्म में एकता महात्माओं की पहचान है तो मन, वचन, कर्म में भिन्नता दुरात्माओं का लक्षण है। इस कसौटी पर कस कर देखें तो युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द और स्वयं को ऋषि का शिष्य कहने में गर्व अनुभव करने वाले और उनकी प्रेरणा से ही कुपथ से निकलकर सुपथ पर चलने वाले स्वामी श्रद्धानन्द अनुपम और अद्वितीय थे। देव दयानन्द ने न जाने कितनी पतित आत्माओं का उद्धार किया और उन्हें इतिहास में स्मरणीय बनाया, इसकी गिनती करना कठिन है। अपने आचार्य के इस स्वरूप को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा था-

''ऋषिवर, तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे अब (सन् 1925 में) 42 वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्यमूर्ति मेरे हृदयपटल पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी ही बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी ही आत्माओं की काया पलट की, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है। परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशकों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया, परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन-लाभ करने योग्य बनाया। भगवान् मैं तुम्हारा ऋणी हूँ। मुझे अपना सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।''

स्वामी श्रद्धानन्द की कथनी और करनी में कैसी एकरूपता थी, इसके अनेक उदाहरण उनके जीवन से दिये जा सकते हैं।

मानवता, सात्विकता, समर्पण, त्याग, सेवा के साकार स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन बहु-आयामी था। हिमालय के चरणों में भगवती भागीरथी के पावन तट पर गुरुकुल कांगड़ी में वैदिक ज्ञान का अक्षय वट वृक्ष लगाने वाले इस महान् संन्यासी ने भारत के स्वातन्त्र्य समर में भी महान् सेनापति की भूमिका सफलतापूर्वक निभाई थी।

सत्याग्रह और अहिंसा के बलपर देश को स्वतन्त्र करने का महान् संकल्प लेकर अपना जीवन समर्पित कर देने वाले महात्मा गांधी के साथ महात्मा मुंशीराम का अटूट प्रेम का सम्बन्ध था। महात्मा गांधी को 'महात्मा' के सम्बोधन से सर्वप्रथम सम्बोधित करने वाले महात्मा मुंशीराम ही थे। उसके बाद तो महात्मा गांधी के साथ 'महात्मा' शब्द ऐसे चस्पा हो गया जैसे कि वह 'गांधी' का पर्यायवाची ही हो। महात्मा गांधी उनको हमेशा अपने बड़े भाई का सा आदर देते थे। जब गांधी जी पहली बार दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे तो अपने आश्रमवासी छात्रों के साथ सीधे गुरुकुल कांगड़ी ही पहुंचे थे और वहां जाकर उन्होंने महात्मा मुंशीराम का चरण स्पर्श किया।

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम जहां गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के कारण विश्व इतिहास में अमर है, वहां स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास भी स्वामी जी के योगदान की चर्चा के बिना अधूरा है। दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने प्रवासी भारतीयों के अधिकारों के प्राप्ति के लिए सत्याग्रह प्रारम्भ किया और आर्थिक सहयोग की अपील की। इस अपील पर स्वर्गीय गोखले चन्दा एकत्र करने के काम में लग गये। गांधी जी की अपील का गुरुकुलवासियों पर इतना प्रभाव पड़ा कि ब्रह्मचारियों एवं अध्यापकों ने अपने भोजन में कमी करके इससे होने वाली आय के अतिरिक्त हरिद्वार के समीप बनने वाले 'दूधिया बांध' पर पत्थर तोड़ने और मिट्टी डालने की मजदूरी करके पन्द्रह सौ रुपया श्री गोखले के पास भेज दिया। इस सम्बन्ध में श्री गोखले ने 27 नवम्बर, 1913 को महात्मा मुंशीराम को जो पत्र लिखा था वह पठनीय है-

''मुझे रेवरेण्ड एण्ड्रूज और पंडित हरिश्चन्द्र ने बताया कि किस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारी दक्षिण अफ्रीका के लिए घी-दूध छोड़कर और साधारण कुलियों और मजदूरों की तरह मजदूरी करके रुपया इकट्ठा कर रहे हैं। दिल हिलाने वाले इस देशभक्तिपूर्ण कार्य के लिए मैं उनको क्या धन्यवाद दूं। यह तो उनका वैसे ही अपना काम है, जैसा कि आपका और मेरा काम है। वे इस प्रकार भारत माता के प्रति अपने ढंग से कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। फिर भी भारतमाता की सेवा के लिए त्याग और श्रद्धा का जो आदर्श उन्होंने देश के युवकों तथा वृद्धों के सामने उपस्थित किया है, उसकी अन्तःकरण से प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता।''

20 मार्च सन् 1919 को अहमदाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दिये गये ऐतिहासिक भाषण को सुनकर वायसराय चैम्सफोर्ड घबरा गये।

'मार्शल ला' से भयभीत कराहते हुए पंजाब को देखकर भी वीर संन्यासी का हृदय शांत न रह सका। प्रेम और सहानुभूति के 'फाहे' को उनके जरकी हृदय पर रखने के लिए 1919 के कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में इस संन्यासी ने अपने आर्यत्व का संदेश दिया था।

जलियावाला काण्ड के पश्चात् क्षत-विक्षत पंजाब अत्याचारों की पीड़ित वेदना से आहत हो चुका था। कोई साहस नहीं कर पा रहा था कि पंजाब की धरती पर पुनः स्वतन्त्रता की मशाल जला सके, ऐसे में प्रभु-भक्त स्वामी श्रद्धानन्द ही सामने आये और निर्भीकता के साथ वेदमन्त्रोच्चारण पूर्वक राष्ट्र-भाषा हिन्दी में कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में ऐतिहासिक भाषण दिया।

इस भाषण के सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने कहा था ''श्रद्धानन्द का भाषण उच्चता, पवित्रता, गम्भीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से अन्त तक बनी हुई थी।

सन् 1919 का वर्ष स्वामी जी के जीवन-इतिहास का एक अद्वितीय वर्ष था। 30 मार्च का दिन दिल्ली की प्रत्येक दुकान और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में सर्वत्र सन्नाटा और शांति। यह शांति मरघट की शांति न होकर स्वदेश प्रेम की अनुपम शालीनता धारण किए हुए थी। स्वामी जी के नेतृत्व में एक विशाल परन्तु शांत जलूस चांदनी चौक में निकला जब वह जुलूस घंटाघर पर पहुंचा तो कुछ गोरखा सिपाहियों ने हवाई फायर किये। स्वामी जी गोरखा सिपाहियों की ओर बढ़े, हवाई फायरिंग का कारण पूछा। परन्तु कुछ सिपाहियों ने आगे बढ़कर अपनी बन्दूकों का मुख स्वामी जी की ओर कर दिया। तब उस

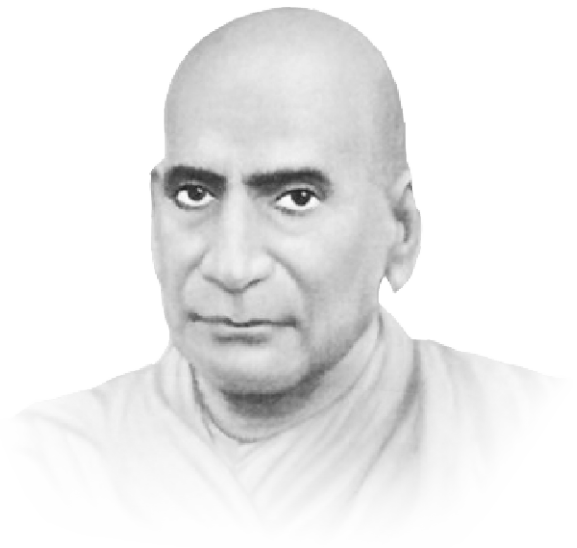

वीर, निर्भीक, देश-प्रेमी आर्य संन्यासी ने अपने सीने से वस्त्र हटाकर सिंह गर्जना करते हुए कहा था- 'लो मैं खड़ा हूँ, मारो गोली। अहा! यह दृश्य कितना आकर्षक था, कितना वीरतापूर्ण था। स्वामी जी उमड़ते हुए जन-समुद्र को अपने नेतृत्व में चांदनी चौक में से ले जा रहे थे, तो ठीक घंटाघर पर ब्रिटिश सिक्कों पर पलने वाले कुछ भारतीय सैनिकों ने उस आदर्श राष्ट्र-प्रेमी वीर विनायक को रोकना चाहा। जब वे उनकी हवाई फायरिंग की परवाह न करते हुए सिंह समान अपने मार्ग पर बढ़े जा रहे थे, तो ठीक घंटाघर पर कुछ सैनिकों की चमचमाती संगीनें लोगों की ओर निकल पड़ी। स्वामी जी ने गरजते हुए कहा- 'जनता पर गोली चलाने से पूर्व मेरी छाती में गोली मारो।'

स्वामी जी के निर्भीक व्यक्तित्व ने संजीवनी औषधि का कार्य किया और दिल्लीवासियों ने धर्म और जाति के भेद-भाव के बिना उन्हें नवचेतना का मसीहा मान लिया। राजनीति के क्षेत्र में स्वामी जी का पहला चरण इतना सशक्त था, जिसने सबको चमत्कृत कर दिया था।

हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर

स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे। वे हम एक हैं की व्याख्या 'ह' से हिन्दू और 'म' से मुस्लिम किया करते थे। वे व्याख्यान देकर नहीं अपितु प्रत्यक्ष आचरण द्वारा एकता स्थापित करना चाहते थे।

4 अप्रैल के दिन दोपहर बाद की नमाज के पीछे विश्व की प्रसिद्ध जामा मस्जिद में मुसलमानों का जलसा हो रहा था। भीड़ में से मौलाना अब्दुल्ला चूड़ीवाले ने अचानक आवाज देकर कहा- ''स्वामी श्रद्धानन्द की तकरीर भी होनी चाहिए। दो-तीन उत्साही युवक उठे और स्वामी जी को नये बाजार के निवास से लाए। अल्ला हो अकबर के नारों के साथ स्वामी जी मस्जिद के मिम्बर (बेदी) पर विराजमान हुए। स्वामी जी ने 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अथा ते सुम्नमीमहे।' इस वेद मन्त्र से प्रारम्भ कर 'ओं शांतिः शांतिः शांतिः' कहकर व्याख्यान समाप्त किया। विश्व के इतिहास में यह पहला अवसर था। जब किसी गैर मुस्लिम ने दिल्ली की जामा-मस्जिद में खड़े होकर इस प्रकार वेदोपदेश दिया हो। इस घटना से वे धर्म और जाति की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव से महामानव और अजातशत्रु बन गये थे।

वे सच्ची धर्म निरपेक्षता के समर्थक थे। आपने एक बार लिखा था कि भिन्न-भिन्न धर्म तथा सम्प्रदाय भी देश में राजनैतिक और सामाजिक एकता उत्पन्न करने में बाधक नहीं हो सकते और इकत्तीस करोड़ भारतवासी देश में सच्ची राष्ट्रीयता स्थापित कर सकते हैं। सनातन धर्मी, आर्यसमाजी, ब्राह्म, जैन, बौद्ध, पारसी, मुसलमान, ईसाई और यहूदी आदि सब अपने ढंग से पूजापाठ करते हुए भी भारतमाता की पूजा में एक होकर भ्रातृवाद का संगठन पैदा कर सकते हैं।

दलितोद्धारक

स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील थे। हिन्दू समाज से अछूत जातियों को अलग करके उसको दो टुकड़ों में बांट देने की सरकार की जिस मूढ़ योजना को महात्मा गांधी सन् 1931 में दूसरी गोलमेज सभा में समझ पाये थे, स्वामी जी ने अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के भाषण में सन् 1919 में ही इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा था- लन्दन में भारत की रिफार्म स्कीम-कमेटी के सामने ईसाई मुक्ति फौज के बूथ टकर साहब ने कहा है कि भारत के साढ़े छः करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहिए क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश गवर्नमेंट रूपी जहाज के लंगर है। इस वाक्य के कूटनीतिक अर्थ को स्पष्ट करके उन्होंने कहा था- आज से वे साढ़े छः करोड़ हमारे अछूत नहीं रहे बल्कि हमारे बहिन और भाई हैं। उनके पुत्र और पुत्रियां हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे।

अहमदाबाद में जून 1924 में होने वाले ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के अवसर पर आपने महात्मा गांधी को भेजे तार में कहा था- कृपा करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रान्तीय हिन्दू सभासदों को, जो नौकर रख सकते हैं, कहा जाए कि वे अपनी व्यक्तिगत सेवाओं के लिए जो नौकर रखें, उनमें एक नौकर अवश्य अछूतों में से ही हो। जो ऐसा न कर सके, वह कांग्रेस के अधिकारी न रहे। उन्होंने स्वतन्त्र रूप से दलितोद्धार सभा बनाई और उनका उद्धार करना प्रारम्भ किया।

व्यावहारिक दृष्टिकोण

स्वामी जी का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यावहारिक था। सन् 1921 में अखिल भारतीय कांग्रेस कार्यकारिणी ने तीन माह में स्वराज्य-प्राप्ति का लक्ष्य रखा तो आपने स्पष्ट कहा कि इस अवधि में स्वराज्य तो मिलेगा नहीं और उसकी प्रतिक्रिया बहुत बुरी होगी। सन् 1921 तक स्वराज्य न मिलने पर महात्मा गांधी हिमालय चले जाने की बात कहने लगे तो स्वामी जी ने ही उन्हें इस प्रकार की बात कहने से रोका। कोरे सत्याग्रह से स्वराज्य प्राप्ति में आपका किञ्चिन्मात्र विश्वास नहीं था। आप कहा करते थे कि स्वराज्य की प्राप्ति तो भूकम्प के समान किसी अनहोनी घटना से ही होगी। ये विचार आपने कांग्रेस की सत्याग्रह जांच कमेटी के सामने 14 अगस्त 1922 को साक्षी देते हुए कहे थे।

स्वामी जी के मन में देश की स्वतन्त्रता की कितनी ललक थी। यह उनके 25 सितम्बर 1920 को प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी को लिखे पत्र से प्रकट होती है। वे लिखते हैं- इस समय मेरी सम्मति में असहयोग की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है, यदि यह आन्दोलन अकृत कार्य हुआ और महात्मा गांधी को सहायता न मिले तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न पचास वर्ष पीछे जा पड़ेगा। इसलिए मैं इस काम में शीघ्र ही लग जाऊँगा।

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम का यह महान् योद्धा, भारतीय संस्कृति, शिक्षा, परम्परा का रक्षक, आदर्श सुधारक, आदर्श आचार्य जीवन के अन्तिम क्षण तक स्वयं को समर्पित करता रहा। एक धर्मान्ध मुसलमान की तीन गोलियों को अपने सीने पर झेलकर यह आदर्श कर्मयोगी, दीन-दलितों का उद्धारक, ईश्वर प्रेम में पगा प्यारा, श्रद्धा की साक्षात् प्रतिमा स्वामी श्रद्धानन्द पहले ही सर्वमेघ यज्ञ का उत्कृष्ट यजमान बन अपना मन और धन गुरुकुल के भेंट कर चुके थे, अब सर्वहूत यज्ञ करके तन को भी भेंट चढ़ा दिया।

उनकी मृत्यु का समाचार सुन 'बड़े भाई' की मौत पर 'छोटे भाई' के मुख से निकला- 'शानदार जीवन का शानदार अन्त' महात्मा गांधी ने केवल ये शब्द ही नहीं कहे, अपितु 'यंग इण्डिया' में उनकी लेखनी भी चार-चार आंसू बहाये बिना न रूक सकी। गांधी जी ने लिखा- 'स्वामी जी एक सुधारक थे वे एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक रोग-शय्या पर नहीं किन्तु रणांङण में मरना पसन्द करते हैं। वे वीर के समान जीये और वीर के समान मरे।

- प्रोफेसर एवं निदेशक
श्रद्धानन्द वैदिक शोध संस्थान, हरिद्वार

बालक मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द

– ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त

बनारस में बालक मुंशीराम का शैशव और किशोरावस्था पिता के लाड़-प्यार में बीता। पुलिस में पिता हों तो बच्चे को क्या कमी? संग-कुसंग स्वाभाविक था। उन्हीं दिनों वहां एक ऐतिहासिक घटना घटी स्वामी दयानन्द सरस्वती का काशी आगमन और पौराणिक पंडितों से शास्त्रार्थ। काशी हिल उठी। वैदिक सूर्य की किरणों से मन का तमस दूर हो रहा था। फिर भी स्वार्थी तत्वों ने अफवाहों का बाजार गर्म किया। ''कानफुसिया संचार माध्यम'' ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को एक जादूगर की संज्ञा दी। ऐसा जादूगर जो बालकों को पकड़ ले जाता है। स्पष्ट है कि युवा पीढ़ी प्रभावित हो रही थी नवीन वैदिक विचारधारा से। दुष्प्रचार किया गया कि दयानन्द सरस्वती ''जादू की मशाल'' लेकर चलते हैं'' तमसो मा ज्योतिर्गमय'' का अनर्थ किया अनार्यों ने। बालक मुंशीराम को उन दिनों घर से बाहर नहीं निकलने दिया कि कहीं वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रभाव में न आ जायें। पिता नानकचन्द चीन की दीवार समान संन्यासी और मचलते मन मुंशीराम के मध्य अचल रहे।

अनेक वर्षों बाद, उन्हीं जादूगर संन्यासी- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बरेली के शहर कोतवाल नानकचन्द के पुत्र, 23 वर्षीय मुंशीराम को पतन पथ से बचाया, प्रगति पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। उनका मन पढ़ने में लगा, वे मुख्तार-वकील बनें, कल्याण पथ के पथिक बने। अंततः आर्य जगत को मिला एक देदीप्यमान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती।

चलिए लौट चलें बरेली। वर्ष है 1879 ईसवी। स्वामी दयानन्द सरस्वती के वेद प्रवचन की धूम है, चर्चा घर-घर में है। श्रोता स्वदेशी और विदेशी है, भारतीय हैं और है फिरंगीः कलेक्टर और कमिश्नर। नानकचन्द जी पर शहर कोतवाल होने के नाते पुलिस प्रबन्ध का दायित्व है। वे वेद प्रवचन से प्रभावित हुए किन्तु मूर्तिपूजा खण्डन से क्षुब्ध। सत्य विद्या के प्रतिपादन को उन्होंने हरि निन्दा माना और कहा ''हरिहर निन्दा सुनई जो काना, होई पाप गोघात समाना'', फिर भी पुत्र मुंशीराम को प्रेरित किया कि वह बेगम बाग में स्वामी दयानन्द सरस्वती का सत्संग करे और टाउन हॉल में प्रवचन सुने। पिता को पूरी आशा थी कि पुत्र को सुधार लेंगे स्वामी जी। उसे नास्तिक से आस्तिक बना लेंगे। आशा निराधार न थी, निराशा न बनी।

नास्तिक नवयुवक मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रवचन सुने, उनकी दिनचर्या को निकट से देखा, ब्रह्म मुहूर्त में भ्रमण में साथ हो लिए किन्तु कदम से कदम न मिला सकने पर पिछड़ गये। ईश्वर के अस्तित्व सम्बन्धी प्रश्न व उत्तर की श्रृंखला चलती रही। ''ओ३म्'' पर स्वामी जी का व्याख्यान सुनकर नवयुवक को आत्मिक आनन्द की अनुभूति हुई थी। फिर भी मन में द्वन्द्व होता रहा, बावजूद इसके कि स्वामी जी की विद्वता से, उनके तर्क से वे निरूतर हो जाते थे। युवा मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से कहा ''महाराज आपकी तर्कण शक्ति बड़ी तीक्ष्ण है। आपने चुप तो करा दिया परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है।'' स्वामी जी ने गम्भीर स्वर में कहा'' ..... तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।'' मुंशीराम जी को स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म और सत्य विद्या के आदि मूल परमेश्वर में ऐसी श्रद्धा हुई कि सफल गृहस्थ जीवन एवं वानप्रस्थ के बाद जब महात्मा मुंशीराम ने संन्यास 1917 ई. में लिया तो अपना नया नाम चुना श्रद्धानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती।

पुत्र मुंशीराम से पिता नानकचन्द ने यह आशा न की कि मृत्यु पश्चात उनका श्राद्ध होगा, उन्हें कोई पानी भी देगा। किन्तु धीरे-धीरे वे पुत्र से प्रभावित होने लगे, पुत्र की धार्मिक आस्था एवं वैदिक विचार उन्हें भाने लगे। तब तक वे मुंशीराम जी की मुख्तारी वकालत एवं धनोपार्जन की क्षमता से प्रभावित तो थे ही, आर्यसमाज के वैदिक कर्म काण्ड की ओर भी झुकने लगे। मृत्यु से कुछ समय पूर्व उन्होंने इच्छा व्यक्त की थी ''वैदिक हवन कराओ। अंतिम सांस के साथ भी कहा कि वैदिक हवन कराया जाये। पुत्र की धर्मनिष्ठा पिता पर अमिट छाप छोड़ चुकी थी।

शिक्षा जगत में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की अनुपम देन हैः गुरुकुल कांगड़ी। यह था पुरातन और नूतन शिक्षा प्रणालियों का मधुर-मिश्रण। गुरुकुल कांगड़ी की चर्चा विस्तार से करने के पूर्व यह लिखना आवश्यक है कि ''क्या महाविद्यालय जालन्धर'' का बीज बोया मुंशीराम जी ने ''आर्य पुत्री पाठशाला'' के रूप में। इसका शुभारम्भ भी रोचक है। उनकी बड़ी बेटी, जो उस समय ईसाई संचालित शाला की छात्रा थी, उसने एक शाम एक गीत गया पिता के लिएः ''एक बार ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगे गा मोल; ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।'' इस पर मुंशीराम जी के कान खड़े हो गये और शिक्षा संस्थान के माध्यम से वैदिक धर्म प्रचार का बीड़ा उठाया उन्होंने। इसी श्रृंखला में एक गुरुकुल की स्थापना तो उनके लिए वैदिक मान-मर्यादा का प्रश्न बन गया था। गुरुकुल की स्थापना में था जीवन, और असफलता में-मरण! महात्मा मुंशीराम गुरुकुल अभियान में सफल रहे और सत्तर वर्ष तक जिए।

26 नवम्बर 1896। आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री गोविन्दपुर आर्य समाज में प्रस्ताव पारित कर निर्णय लियाः गुरुकुल की स्थापना की जाये। मुंशीराम जी को योजना के कार्यान्वयन का

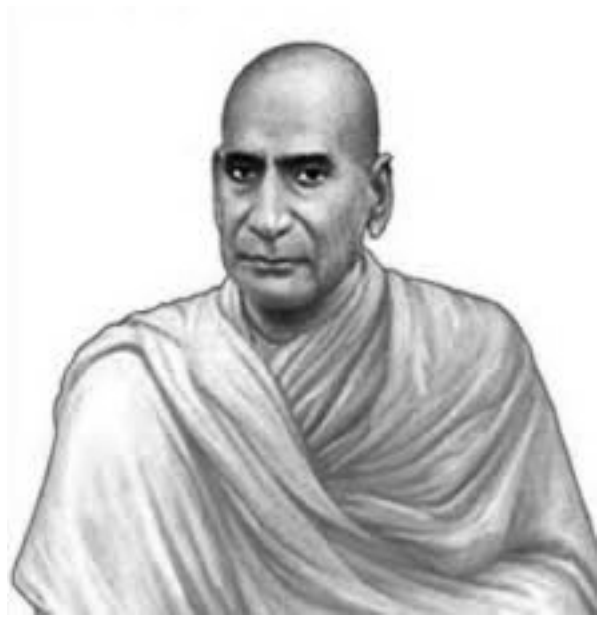

दायित्व सौंपा गया। मुंशीराम जी ने एक दिन भीष्म प्रतिज्ञा कीः गुरुकुल बनाने के लिए जब तक तीस हजार रुपया एकत्र न कर लूंगा, घर में पैर न रखूंगा। उन्होंने इस प्रतिज्ञा का पालन किया। धनराशि एकत्र करने के दौरान आर्य समाज जालन्धर में बोरिया-बिस्तर जमाया और महल समान मकान तज दिया। अंततः राशि एकत्र हुई, गुरुकुल की स्थापना हुई सन् 1900 ई में, अपना घर उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा को दान दे दिया। पैतृक भवन, अपने दो पुत्रों-हरिश्चन्द्र एवं इन्द्र की सहमति से, गुरुकुल कांगड़ी को भेंट कर दिया।

महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) द्वारा बोया बीज उन्हीं के जीवन में अंकुरित हुआ, पौधा बनने लगा था वृक्ष और आज बन चुका है वट वृक्षः गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार। आर्ष शिक्षा प्रणाली को पुनः प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से 8 अप्रैल 1900 ई. को वैदिक आश्रम गुजरांवाला (अब पाकिस्तान में है) में गुरुकुल की स्थापना हुई थी। गुरुकुल प्राकृतिक वातावरण में पनपे, इसलिए 2 मार्च 1902 ई. को कांगड़ी ग्राम, हरिद्वार के निकट गंगा तट पर स्थानांतरित हुआ। आर्य दानी, मुंशी अमन सिंह द्वारा दी गई 700 बीघे जमीन पर पुनः नींव पड़ी नाम पड़ा गुरुकुल कांगड़ी, निकटवर्ती स्थान के नाम पर। विद्यार्थी-ब्रह्मचारी के पहले दल ने प्रवेश पाया, उनमें थेः हरिश्चन्द्र और इन्द्र- महात्मा मुंशीराम के दोनों पुत्र 1912 ई. में वही दोनों प्रथम स्नातक हुए। पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति का कांगड़ी अनुभव उन्हीं के शब्दों में ''भयंकर जंगल पार करके उस भूमि तक पहुंचने में साढ़े नौ घण्टे लगे। वैसे यह फासला कुल चार मील का था। ... घने जंगलों के बीच कई बीघे जमीन साफ की गई थी। फूस के छप्परों की एक लम्बी पंक्ति थी जो छात्रों के रहने का आश्रय स्थान था। खिली चांदनी में अद्भुत शोभा दिखा रहा था। .....यह गुरुकुल का प्रारम्भिक रूप था।'' पठन-पाठन अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में होता था। सभी समर्पित थे वेदानुकूल जीवन जीने के लिए कठिनाइयां स्वतः सरलता में परिणित हो गई। गुरुकुल तक जाने-आने का एकमात्र मार्ग नावों के कच्चे पुल पर से था। गंगा की वेगवती धारा उसे छिन्न-भिन्न कर देती तो महात्मा मुंशीराम, आचार्य और विद्यार्थी अपने श्रम से उसे फिर बना देते। चरित्र बल से मनोबल ऊँचा उठता था। तभी तो 1924 ई. को भयंकर बाढ़ ने वहां तब तक बने भवनों को नष्ट कर दिया तो कनखल-ज्वालापुर मार्ग के दक्षिण में गुरुकुल पुनः प्रतिस्थापित हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द के शिष्य दीपक जलाकर अंधकार दूर करते थे, उसे कोस कर नहीं। गुरुकुल के प्रथम आचार्य आजन्म ब्रह्मचारी गंगादत्त जी ब्रह्मचारियों की प्रेरणा का स्रोत थे।

पुलिस और सी. आई. डी. की रिपोर्ट को झुठलाते हुए, महात्मा मुंशीराम के व्यक्तित्व और कृतित्व से आकर्षित होकर गुरुकुल में आये- ब्रिटिश प्रतिपक्ष नेता और बाद में प्रधानमन्त्री, रेम्जे मैक्डॉनल्ड, यू. पी. के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन तत्कालीन वायसराय और महात्मा गांधी। उन्नति अभी भी हो रही है। वेद के साथ-साथ प्रबन्ध एवं कम्प्यूटर की शिक्षा गुरुकुल में दी जाती है। गुरुकुल को आज विश्वविद्यालय का दर्जा मिला है किन्तु कुछ मनीषियों का विचार है कि ''उन जीवन मूल्यों का ह्रास भी हुआ है जिनके उन्नयन के लिए ''महात्मा मुंशीराम ने गुरुकुल की स्थापना की थी।

आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती निर्भीकता की मूर्ति थे। ब्रिटिश तंत्र की तानाशाही के विरुद्ध जन आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए, चांदनी चौक दिल्ली में अंग्रेजी सेना के मणिपुरी सैनिकों ने जलूस को आगे बढ़ने से रोका। उत्तेजित जन समूह पर सैनिकों ने संगीनें तानी-रूख आक्रामक था। गोली चलाने की धमकी दी। उस तनाव के माहौल में भीड़ को शान्त करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने अपने सीने से संन्यासी का काषाय वस्त्र हटाकर सैनिकों को सम्बोधित किया, पहले इस सीने में संगीन घोंपो, पहले मुझे गोली मारो। क्या गर्जना थी, क्या निर्भीकता थी। संन्यासी के तेज के आगे संगीनें झुक गई, रायफल की नली का रूख सीने से हट कर धरती की ओर हो गया; अवरूद्ध मार्ग खुल गया। विशाल हिन्दू-मुसलमान की मिली जुली भीड़ ने आर्य संन्यासी की जयकार की।

4 अप्रैल, 1919, जामा मस्जिद दिल्ली। मुसलमानों के विशाल समूह के आग्रह पर आमंत्रित थे स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती। इतिहास में वहां से वेदमंत्र पाठ कर प्रवचन करने वाले प्रथम आर्य संन्यासी। उन्होंने ऋग्वेद के मंत्र से अपना व्याख्यान आरम्भ किया।

''ओ३म! तवं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो वभूविथ। (हमारे रक्षक पिता और मान दिलाने वाली माता, हम इस यज्ञ में आप से सफलता की कामना-याचना करते हैं) ओ३म् शांतिः और आमीन के साथ भाषण समाप्त हुआ। 6 अप्रैल को फतेहपुरी मस्जिद में यही दृश्य था। अंग्रेजी राज्य हिल उठा।

स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति नमाजियों की वफादारी क्षणिक थी। जब आर्य संन्यासी ने मलकाना (मुसलमान) राजपूतों को बड़ी संख्या में ''शुद्ध'' करके पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित किया तो मुल्ला-कठमुल्ला बौखला गये उन्होंने षडयन्त्र रचा। 23 दिसम्बर 1926 सायं 4 बजे नया बाजार स्थित निवास पर राजधानी दिल्ली में एक धर्मांध मुसलमान ने संन्यासी के सीने में दो गोलियां मारी। उनकी आत्मा ने शरीर त्याग दिया। हत्यारे को फांसी हुई।

कुछ ही समय पहले अपने पुत्र इन्द्र से स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने कहा थाः ''धर्मयज्ञ में मेरे प्राण की आहुति पड़े यह मेरे लिए गौरवमय संतोष का स्रोत होगा।''

- उपवन 609, सैक्टर-29, नोएडा-201303

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित
अभिनंदन एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ
मानव सेवा प्रतिष्ठान अहर्निश समाजसेवा में संलग्न है – स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

दिनांक 10 नवम्बर, 2024 को आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली के विशाल सभागार में अनेक गुरुकुलों के संस्थापक व संचालक आर्य जगत के वीतराग तपोनिष्ठ संन्यासी श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष एवं आचार्य वेदार्ष महाविद्यालय न्यास गुरुकुल गौतम नगर के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित अभिनंदन एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

मानव सेवा प्रतिष्ठान एक सामाजिक संगठन है जो पिछले 26 वर्षों से अपने उद्देश्यो को लेकर समाजसेवा के कार्यों में अहर्निश संलग्न एवं सतत् प्रयत्नशील है। मानव सेवा प्रतिष्ठान का यह 26वां वार्षिक छात्रवृत्ति वितरण व अभिनंदन समारोह था। सर्वप्रथम आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला की छात्राओं ने मंगलाचरण एवं स्वागत गीत के माध्यम से कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी महाराज आचार्य आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय माऊन्ट आबूरोड राजस्थान, श्री श्री 1008 कालीदास स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज, कालीदास आश्रम सांपला रोहतक दिल्ली रोड, श्री रामवीर शास्त्री प्रधान, स्नातक मंडल गुरुकुल झज्जर हरयाणा, श्री रणवीर सिंह जी प्रधान अखिल भारतीय खत्री सभा, स्वामी आनन्द स्वरूप जी कन्या गुरुकुल नरेला, श्री प्रबोध चन्द्र गौतम नरेला, श्री हरपाल राणा कादीपुर, श्री सुरजीत सिंह राणा करनाल, श्री इन्द्रजीत शास्त्री रोहतक, श्री सुभाष चंद्र शास्त्री डूंगरगढ़, राजस्थान, श्री सोमवीर शास्त्री महामन्त्री, आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली, डॉ. कमला सिंह अमेरिका, डॉ इन्दू ग्रोवर दिल्ली, डॉ. विजेता आर्या रोहिणी, श्रीमती दर्शना शास्त्री सॉपला, रोहतक, डॉ. विनोद जी मोरखेड़ी, श्री रघुवीर सिंह हनुमानगढ़, राजस्थान, श्री रामपाल शास्त्री, श्री धर्मपाल शास्त्री व श्री देवकेतु शास्त्री नरेला, श्रीमती सरोज आर्या जी व श्रीमती संतोष आर्या जी नरेला, श्री देवेन्द्र सिंह सांगवान, श्री ओम खत्री नरेला, श्री ब्रह्मजीत सिंह, श्री ब्रह्मप्रकाश खत्री रोहतक, मास्टर रामकुमार जी सॉपला, रोहतक आदि अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों व विदुषियों, संन्यासियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी उपस्थिति एवं उद्बोधन से कार्यक्रम को सुशोभित व सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री, वरिष्ठ उपप्रधान श्री सोमदेव जी शास्त्री व श्री हरवीर सिंह शास्त्री चौधरी बलजीत सिंह सांगवान सदस्य नजफगढ, उपमन्त्री श्रीमती कमलेश जी मकड़ौली कलॉ रोहतक, सदस्य श्रीमती शीला सहरावत जी पालम द्वारका ने सभी आगन्तुक अतिथियों को ओ३म् के पटके पहनाकर व गायत्री मन्त्र का स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया।

अभिनंदन समारोह में भारत के अनेक राज्यों से चयनित विद्वान्, आचार्यों व भजनोपदेशकों को अभिनंदन पत्र, शाल व धन राशि देकर सम्मानित किया गया। सन्त समाज में प्रतिष्ठित श्री श्री 1008 कालीदास स्वामी कृष्णानन्द महाराज सॉपला रोहतक, आर्य जगत में सम्मानित विद्वान स्वामी ओमानन्द जी पूर्व नाम आचार्य ओमप्रकाश जी आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय माऊन्ट आबूरोड, राजस्थान, स्वामी सच्चिदानंद जी प्रणव गुरुकुलम् आर्य समाज वेद मन्दिर पाडवान चरखी दादरी, हरयाणा व आचार्य प्रमोद जी संचालक कन्या गुरुकुल दबथला, मेरठ के साथ–साथ नागालैंड से पधारे आचार्य अमित जी आर्य, हैदराबाद दयानंद वेद विद्यालय गुरुकुल मलकपेट से आये हुए आचार्य संजय कुमार आर्य, महाराष्ट्र परली वैजनाथ से आमंत्रित आचार्य सत्येन्द्र अंकुशराव जी व आर्य समाज सैक्टर 14, 15 सोनीपत, हरयाणा को केन्द्र बनाकर नवयुवकों के निर्माण में संलग्न आचार्य संदीप जी को मानव सेवा प्रतिष्ठान की कार्यकारिणी व परिवार जनों के द्वारा सम्मानित किया गया।

राजस्थान के अलवर जिले से आमंत्रित आचार्या श्रद्धा जी कन्या गुरुकुल दाधिया, डॉ आचार्या पद्मश्री सुकामा जी के सानिध्य में अध्यापन कार्य में संलग्न प्राध्यापिका सुजाता आर्या विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की रोहतक, अध्यापिका प्रीति आर्या कन्या गुरुकुल लोवाकलॉ, बहादुरगढ़, कथुरा, सोनीपत से सुश्री तनु आर्या भजनोपदेशिका, श्रीमती सावित्री देवी भजनोपदेशिका गाजियाबाद एवं आचार्या मनु आर्या गार्गी कन्या गुरुकुल भैय्या चामड़ अलीगढ़ व श्रीमती किरण जी अध्यापिका आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला का अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया।

कुरुक्षेत्र से पधारे श्री रमेश कुमार शास्त्री, देवबन्द सहारनपुर से पधारे श्री सुरेन्द्र सिंह आर्य भजनोपदेशक, स्वामी ओमानन्द महाराज की कर्मस्थली महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर आर्य आयुर्वेदिक औषधालय से पधारे वैद्य बलराम जी तथा मुकुन्दपुर छपरौली से होशियारी देवी गर्ल्स इन्टर कालेज रठौड़ा, बागपत के प्रबन्धक चौधरी धर्मवीर सिंह आदि 23 चयनित विद्वान्, विदुषियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं व आचार्यों का अभिनंदन किया गया।

अभिनंदित विद्वानों ने अपने उद्बोधन से सभी को लाभान्वित किया। स्वामी ओमानन्द जी व स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज ने अपने उद्बोधन में मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यों की प्रशंसा करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने सभी सम्मानितों तथा छात्रवृत्ति प्राप्त छात्र–छात्राओं को आशीर्वाद देते हुए ज्ञानवर्धक उपदेश दिया। स्वामी जी ने कहा कि मानव सेवा प्रतिष्ठान अपने स्थापनाकाल से ही समाजसेवा के कार्यों में अहर्निश लगा हुआ है। इस संगठन के माध्यम से प्रतिवर्ष सैकड़ों छात्र–छात्राओं एवं विद्वानों को सम्मानित किया जाता है। समाजसेवा के कार्य में लगे इस संगठन के समस्त पदाधिकारयों को मैं अपनी ओर से साधुवाद देता हूँ और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि इन्हें और अधिक शक्ति प्रदान करें तथा दानी महानुभावों से अपील करता हूँ कि मानव सेवा प्रतिष्ठान का तन–मन–धन से सहयोग करें जिससे यह संगठन इसी तरह से समाज के जरूरतमंद छात्र–छात्राओं एवं विद्वानों, आचार्य/आचार्याओं तथा उपदेशक/उपदेशिकाओं की सहायता एवं सम्मान कर सकें।

अन्त में मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। मानव सेवा प्रतिष्ठान के महामंत्री डॉ कंवर सिंह जी ने छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं को अपना शुभकामना संदेश दिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन डॉ. कुलदीप आर्य–नरेला व श्री रामपाल शास्त्री कार्यकर्ता प्रधान के द्वारा किया गया। अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह का कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज नोएडा का वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ
वैदिक संस्कृति ही वैश्विक संस्कृति है – स्वामी आर्यवेश
राष्ट्रवाद की अवधारणा का शंखनाद स्वामी दयानन्द जी ने किया –अनिल आर्य
सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानन्द की राष्ट्र को अनुपम देन–पूर्व विधायक नवाब सिंह नागर
गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में राष्ट्र के प्रति समर्पित होने का संकल्प कराया जाता है–डॉ. वेदपाल
स्वराज के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी थे – नरेन्द्र वेदालंकार

गुरुकुल नोएडा के वार्षिकोत्सव में 7 दिसम्बर, 2024 को वैदिक संस्कृति सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में वैदिक संस्कृति पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वेद का ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में सम्पूर्ण मानवता के लिए चार ऋषियों के हृदय में दिया था। अतः वेद और वेद के आधार पर विकसित हुई संस्कृति सम्पूर्ण मानवता के लिए है। उन्होंने कहा कि वेद की वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा से स्पष्ट हो जाता है कि पृथ्वी पर रहने वाला समस्त मानव समाज एक परिवार है। विभिन्न वर्गों, मत–सम्प्रदायों अथवा जातियों में विभाजित समाज परस्पर सहअस्तित्व, सौहार्द एवं सहिष्णुता की भावना से परस्पर मिलकर ऐसे रह सकते हैं जैसे एक परिवार में अलग–अलग विचारों, रुचियों एवं स्वभावों से युक्त सदस्य मिलकर रहते हैं। वैदिक संस्कृति त्याग की संस्कृति है। समर्पण एवं परोपकार की संस्कृति है। दूसरे को खिलाकर खाने की

शेष पृष्ठ 9 पर

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली का 45वाँ चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाने से ही भारत विश्वगुरु बन सकता है – स्वामी आर्यवेश

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं वेदों के सिद्धान्तों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रचारित किया जाये – प्रो. विट्ठलराव

महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्ष शिक्षा के संवाहक थे – स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

अहंकार मनुष्य को पतन के गढ्ढे में ले जाता है – आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक

गत् 17 नवम्बर से 8 दिसम्बर, 2024 तक गुरुकुल गौतमनगर में चल रहे 45वें चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती समारोह धूमधाम के साथ सम्पन्न हो गया। लगभग 22 दिन चले इस कार्यक्रम में आर्य जगत् के अनेक गणमान्य महानुभाव, आर्य नेता, विद्वान् एवं उपदेशक सम्मिलित हुए।

7 दिसम्बर, 2024 को सायंकालीन यज्ञ एवं गुरुकुल सम्मेलन में आर्य जगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने अध्यक्षता की तथा सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव मुख्य अतिथि रहे।

इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा युवा वैदिक विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक एवं गुरुकुल प्राणभूत आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने भी अपने सदोपदेश दिये।

आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने वेद के एक मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि अहंकारी व्यक्ति कभी भी ईश्वर से नहीं जुड़ सकता। ईश्वर ऐसे व्यक्ति से दूर हो जाता है। अहंकार मनुष्य को पतन के गढ्ढे में ले जाता है।

प्रो. विट्ठलराव ने कहा कि हमें वेदों में उपलब्ध वैज्ञानिक चिन्तन को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी की जन्मशती मात्र औपचारिकता के लिए मनाने के बजाय उनके विचारों को तर्क एवं विज्ञान के अनुरूप प्रस्तुत करके जन–सामान्य तक पहुँचाने का कार्य हमें करना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मान्यता एवं प्रतिष्ठा देकर ही भारत अपने खोये हुए अपने गौरव को प्राप्त कर सकता है और विश्वगुरु का सम्मान पा सकता है।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने महर्षि दयानन्द जी को आर्ष शिक्षा का संवाहक एवं प्रतिष्ठाता बताया। उन्होंने कहा कि आर्ष शिक्षा के बिना हम वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि के ज्ञान से वंचित रहेंगे।

गुरुकुल सम्मेलन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने जहां अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत में व्याख्यान प्रस्तुत किये वहीं अष्टाध्यायी कंठस्थ करने वाले ब्रह्मचारियों ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। वेद मंत्रों की अन्ताक्षरी भी प्रभावशाली रही और 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नामक नाटिका प्रस्तुत कर श्रोताओं को शिक्षा एवं मनोरंजन प्रदान किया।

8 दिसम्बर, 2024 को समापन समारोह के अवसर पर एमेटी श्री अशोक चौहान, आर्य समाज के भामाशाह ठाकुर विक्रम सिंह, पूर्व दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री, श्री महेश विद्यालंकार, श्री रघुवीर वेदालंकार, श्री धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, स्वामी विश्वानन्द, स्वामी ओमानन्द आबू पर्वत, श्री अशोक भजनोपदेशक, श्री योगेन्द्र याज्ञिक, आचार्य धनंजय, श्री रामपाल शास्त्री कार्यकारी अध्यक्ष मानव सेवा प्रतिष्ठान आदि ने अपने–अपने विचार रखे। पूर्णाहुति के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के गत् महीनों के प्रमुख कार्यक्रमों का विवरण

1. आर्य समाज भाजू, जिला–शामली मुजफ्फरनगर में 24 सितम्बर, 2024 को सामवेद यज्ञ के समापन पर मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम का आयोजन गांव के प्रधान श्री बॉबी प्रधान के पुरुषार्थ से हुआ। ब्र. संसहरपाल आर्य एवं धर्मेन्द्र आर्य ने व्यवस्था में मुख्य भूमिका निभाई।
2. आर्य समाज भदोड़ा, जिला–मेरठ के वार्षिकोत्सव में 24 सितम्बर, 2024 को सायंकाल मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी आर्यवेश जी सम्मिलित हुए और उनका ओजस्वी व्याख्यान रहा। श्रीमती संगीता आर्या के भजनों का कार्यक्रम रहा। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कपिल आचार्य एवं व्यवस्थापक ब्र. सहसरपाल आर्य थे। आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता चौ. योगेन्द्र मलिक के अतिरिक्त श्री नेपाल सिंह पूर्व प्रधान, श्री देवेन्द्र सिंह मलिक, श्री कंवर पाल मलिक, चौ. ओमकार मलिक, चौ. मंगलसेन मलिक ग्राम प्रधान, चौ. विजेन्द्र सिंह मुखिया जी आदि ने स्वामी जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। कार्यक्रम में स्वामी सत्यवेश, स्वामी आत्मानन्द, आचार्य अरविन्द शास्त्री, श्री विनोद कुमार पूर्व प्रधान आचार्य गुरुकुल बरनावा, स्वामी मुक्तिवेश आदि भी उपस्थित थे।
3. आर्य समाज थर्मल कालोनी, पानीपत में 29 सितम्बर, 2024 को स्वामी आर्यवेश जी का विशेष कार्यक्रम हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में उन्होंने अपना प्रभावशाली प्रवचन प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में महात्मा वेदपाल आर्य के आग्रह पर स्वामी जी सम्मिलित हुए।
4. 29 सितम्बर, 2024 को मध्यान्ह में 2 3 से 5 बजे तक आयोजित आर्य समाज लाजपत राय नगर, गाजियाबाद के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।
5. 29 सितम्बर, 2024 को आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में सायं 6 से 9 बजे तक श्री शम्भू दयाल संन्यास आश्रम गाजियाबाद में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज की पुण्यतिथि तथा संन्यास आश्रम की स्थापना दिवस भी मनाया गया। कार्यक्रम में आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद के संरक्षक श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री सत्यवीर चौधरी, श्री नरेन्द्र कुमार पांचाल, श्रीमती प्रतिभा सिंघल, श्री वेद व्यास, श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट आदि उपस्थित थे। स्वामी सूर्यवेश उपाध्यक्ष संन्यास आश्रम का भी उपदेश हुआ।
6. आर्य समाज फजलपुर (सुन्दरनगर), जिला–बागपत का शताब्दी महोत्सव 4 से 6 अक्टूबर, 2024 को मनाया गया। इस कार्यक्रम में आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव

अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ 7 का शेष

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के गत् महीनों के प्रमुख कार्यक्रमों का विवरण

बेधड़क, श्रीमती संगीता आर्या एवं श्री ओम प्रकाश आर्य के कार्यक्रम चलते है। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. भोपाल सिंह छपरौली एवं यज्ञ के पुरोहित श्री ओमपाल सिंह बड़ौत रहे। 6 अक्टूबर, 2024 को मुख्य समारोह में स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए और अपना ओजस्वी उद्‌बोधन दिया, उनके अतिरिक्त स्वामी सत्यवेश जी, डॉ. बलवीर जी आचार्य, श्री सुखवीर सिंह दखीना, श्री सुरेन्द्रपाल आर्य, श्री नरेन्द्र सिंह तोमर (चिन्टू) आदि भी सम्मिलित हुए। इस शताब्दी महोत्सव का सम्पूर्ण दायित्व सर्वश्री मा. विजय सिंह प्रधान, विनोद कुमार आर्य मंत्री, अमरपाल सिंह कोषाध्यक्ष, ओमेन्द्र सिंह उपप्रधान, ब्रजपाल सिंह आर्य उपमंत्री, डॉ. ईश्वर सिंह अधिष्ठात आर्य वीरदल, मा. बलजीत सिंह, महिपाल तोमर, मा. केशव आर्य, सुधीर राजपूत आदि की विशेष भूमिका रही।

7. स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपःस्थली गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज स्थापना के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 8 अक्टूबर, 2024 को जनपदीय त्रीभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय परिवार की ओर से किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी ने अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि डॉ. धन सिंह रावत, शिक्षामंत्री उत्तराखण्ड, विशिष्ट अतिथि डॉ. सत्यपाल सिंह पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री व कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि प्रो. हेमलता के0 कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्री आदेश चौहान विधायक रानीपुर हरिद्वार, डॉ. सुनील कुमार तोमर कुलसचिव आदि रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. योगेश शास्त्री ने किया तथा गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता डॉ. दीनानाथ शर्मा ने सभी अतिथियों का स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया।

8. वैदिक योग आश्रम, सोमधाम, खेड़ला, गुरुग्राम में सामवेद पारायण यज्ञ का विशेष कार्यक्रम हुआ आयोजित। स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी एवं ठा. विक्रम सिंह जी हुए सम्मिलित। यज्ञ के संयोजक स्वामी विजयवेश जी रहे और व्यवस्थापक साध्वी मुक्तानन्दा तथा श्रीमती रेखा चौधरी थीं। यह कार्यक्रम 11 से 13 अक्टूबर, 2024 की तिथियों में सम्पन्न हुआ।

9. श्री सतीश चन्द्र आर्य पूर्व प्रधान आर्य समाज न्यूयार्क, अमेरिका की धर्मपत्नी श्रीमती सम्पदा आर्या के निधन के उपरान्त शांति यज्ञ एवं प्रार्थना सभा दिनांक 13 अक्टूबर, 2024 को आर्य समाज मंदिर वी–2 धर्म मार्ग, जनकपुरी, नई दिल्ली में आयोजित हुई, जिसमें स्वामी आर्यवेश जी का मुख्य उपदेश रहा। इस अवसर पर श्री सतीश चन्द्र आर्य के परिवारजन, सम्बन्धी गण भी उपस्थित हुए। उनके सुपुत्र श्री आदित्य आर्य एवं विभूति भी प्रार्थना सभा में सम्मिलित रहे।

10. पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट मेडिकल सांइस, रोहतक के वरिष्ठ चिकित्सक कोरोनाकाल के नोडल ऑफिसर डॉ. ध्रुव चौधरी की पूज्या माता जी श्रीमती कमला चौधरी की श्रद्धांजलि सभा में 13 अक्टूबर, 2024 को दोपहर बाद 3 बजे स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, बहन प्रवेश एवं पूनम आर्या जी सम्मिलित हुए तथा स्वर्गीया माता जी के सम्बन्ध में स्वामी आर्यवेश जी ने अपने संस्मरण सुनाते हुए परिवारजनों को सांत्वना दी। डॉ. ध्रुव चौधरी के छोटे कर्नल रोहित चौधरी ने हजारों की संख्या में उपस्थित लोगों को परिवार की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया।

11. 13 अक्टूबर, 2024 को सायंकाल कुरुक्षेत्र में श्री जयकिशन सैनी के देहान्त के उपरान्त परिवारजनों को सांत्वना देने के लिए पहुंचे। श्री जयकिशन सैनी के इकलौते सुपुत्र श्री निशान्त सैनी आर्य समाज बर्मिघम, इंग्लैण्ड के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। स्वामी आर्यवेश जी के वे विशेष सहयोगी हैं। अतः सायंकाल सभी परिवारजनों के बीच स्वामी जी का सदोपदेश एवं दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि का कार्यक्रम रहा। उनके साथ स्वामी आदित्यवेश जी भी सम्मिलित हुए।

12. आर्य समाज कोसीकलां, मथुरा के वार्षिकोत्सव में 17 अक्टूबर, 2024 को स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। आर्य समाज के प्रधान डॉ. अमर सिंह पुनिया व अन्य पदाधिकारियों ने स्वामी जी का स्वागत किया। श्री धनीराम बेधड़क की भजनों का कार्यक्रम रहा।

13. वैदिक तपोवन साधन आश्रम, नालापानी, देहरादून में गुरुकुल के शुभारम्भ समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी आर्यवेश जी 18 अक्टूबर, 2024 को सम्मिलित हुए। उनका सारगर्भित व्याख्यान गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर रहा। यह कार्यक्रम आश्रम के मंत्री इं. प्रेम प्रकाश शर्मा के संयोजन में हुआ। इस अवसर पर अनेक गणमान्य महानुभाव, विद्वान्, प्रचारक, साधु–संन्यासी भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

14. आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता एवं विद्वान् सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के संस्थापक मण्डल के सदस्य प्रो. बलजीत सिंह आर्य की श्रद्धांजलि सभा 25 अक्टूबर, 2024 को गुरुकुल इण्टर नेशनल स्कूल, जीवाना में आयोजित की गई। जिसका संयोजन हरपाल आर्य निपुणा ने किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री गुरुकुल बरनावा रहे तथा रस्म पगड़ी की विधि को पं. धन कुमार शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर अनेक राजनीतिक एवं सामाजिक नेता एवं व्यक्तित्व श्रद्धांजलि देने के लिए पधारे। स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी ओमवेश जी पूर्व मंत्री, श्री साहिब सिंह, श्री सुखवीर सिंह गठीना, स्वामी यज्ञमुनि, श्री राकेश टिकैत आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रो. बलजीत सिंह आर्य के सुपुत्र डॉ. अनिल आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

15. गुरुकुल लाढौत, भैयापुर, जिला–रोहतक के वार्षिकोत्सव में 26 अक्टूबर, 2024 को स्वामी आर्यवेश जी सम्मिलित हुए और पद्मश्री डॉ. सुकामा आचार्या जी के साथ पं. लेखराम पुस्तकालय का उद्‌घाटन किया। कार्यक्रम में गुरुकुल संस्थापक आचार्य हरिदत्त उपाध्याय, निदेश आचार्य नन्दकिशोर, अधिष्ठाता नन्दलाल आर्य, प्रधानाचार्य संजय कौशिक, हरियाणा सभा के पूर्व प्रधान मा. रामपाल दहिया, डॉ. यशवीर सिंह, राजेन्द्र सिंह आर्य, राजकुमार आर्य, आचार्य संदीप आदि भी उपस्थित थे।

16. कन्या गुरुकुल पचगांव, जिला–भिवानी के वार्षिकोत्सव में 26 अक्टूबर, 2024 को सायं 5 बजे स्वामी आर्यवेश जी पहुंचे और अपना व्याख्यान दिया। गुरुकुल के प्रधान श्री ओम प्रकाश, आचार्या दया कुमारी जी, कार्यक्रम के संयोजक श्री अजय शास्त्री, कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता श्री रामावतार आर्य आदि ने स्वामी जी का स्वागत किया।

17. आर्य समाज राजपुरा टाऊन, जिला–पटियाला, पंजाब में 27 अक्टूबर, 2024 को प्रातःकाल स्वामी आर्यवेश जी पंचकुला से चलकर पहुंचे और वहाँ उनका प्रभावशाली व्याख्यान रहा। आर्य समाज के स्तम्भ श्री अशोक छावड़ा व अन्य पदाधिकारियों ने स्वामी जी का स्वागत किया। पूर्व प्रधान श्री विजय आर्य के निवास पर प्रातराश करके वयोवृद्ध माता सुमन चावला से भेंटकर स्वामी जी आर्य समाज मोहाली चण्डीगढ़ मेजर विजय आर्य जी के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

18. बंधुआ मुक्ति मोर्चा की ओर से मजदूरों में मिठाई एवं दीपक आदि वितरित करने के लिए दीपावली के अवसर पर 29 अक्टूबर, 2024 को सायं 6 बजे मोहन डेरा, सूरजकुंड, फरीदाबाद में स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 300 परिवारों को दीपावली की भेंट प्रदान की गई।

19. 30 अक्टूबर, 2024 को आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर आर्य समाज गोविन्दपुरम में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुख्य वक्ता स्वामी आर्यवेश जी रहे। उनके अतिरिक्त जिला सभा के कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण शास्त्री व श्री प्रमोद चौधरी का व्याख्यान एवं श्री भीष्म आर्य के भजनों का कार्यक्रम भी चला। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कृपाल सिंह वर्मा सेवानिवृत प्रधानाचार्य न की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री सत्यवीर चौधरी, श्री नरेन्द्र कुमार पांचाल, श्री सत्यपाल आर्य, श्रीमती प्रतिभा सिंघल, श्री राजेन्द्र कुमार सिंह, श्री बिजेन्द्र सिंह खोखर आदि की उपस्थिति रही। स्वामी आर्यवेश जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ।

20. केन्द्रीय सभा के कार्यक्रम के पश्चात् कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री कृपाल सिंह वर्मा ने अपने निवास पर अतिथि यज्ञ किया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी को आमंत्रित किया। उन्होंने इस यज्ञ को विशेषता प्रदान करते हुए जहां उपस्थित अन्य सभी महानुभावों को और विशेषकर स्वामी आर्यवेश जी को पहले जलपान कराया उसके पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी से अपने पूरे परिवार को उपदेश एवं आशीर्वाद देने का आग्रह किया। आशीर्वाद के उपरान्त परिवार के सभी छोटे–बड़े सदस्यों द्वारा स्वामी जी को दक्षिणा प्रदान करके सम्मान कराया गया। श्री कृष्णपाल सिंह वर्मा स्वयं एक उच्चकोटि के विद्वान् एवं बुद्धिजीवी हैं तथा वे ऑन लाईन दर्शन तथा उपनिषद् की कक्षा चलाते हैं। स्वयं अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे, किन्तु पंचमहायज्ञों में उनकी विशेष श्रद्धा होने के कारण उन्होंने अतिथि यज्ञ का सही रूप करके दिखाया।

21. 31 अक्टूबर, 2024 को दीपावली के अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत के तत्वावधान में आर्य समाज सैक्टर–12, हुड्‌डा कालोनी के प्रांगण में आयोजित विशाल कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता रहे। उनके साथ बिजनौर से पधारे पं. योगेशदत्त आर्य के मधुर भजनों का कार्यक्रम रहा। स्वामी जी के व्याख्यान से श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री आत्म प्रकाश आर्य व आर्य समाज के प्रधान श्री सुरेश मलिक, श्री धर्मवीर श्योराण आदि ने स्वामी जी का स्वागत किया। कार्यक्रम के उपरान्त श्री दलवीर आर्य का आतिथ्य प्राप्त कर श्री धर्मवीर श्योराण के निवास पर महात्मा वेदपाल से भेंट करके प्रस्थान किया।

22. 31 अक्टूबर, 2024 को ही शाम को 7 बजे पानीपत से स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली होते हुए स्वामी आदित्यवेश जी व स्वामी आर्यवेश जी बहरोड़ पहुंचे। वहां आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट के निवास पर यज्ञ किया। सभी परिवारजन यज्ञ में सम्मिलित हुए और सभी को विशेष संकल्प दिलवाये। यज्ञ में बिरजानन्द जी के अतिरिक्त श्री भगवान सिंह वोहरा, बेटी गायत्री आर्या, भानू प्रताप, गुड्‌डू व राहुल आदि ने भी आहुतियाँ प्रदान की। बिरजानन्द जी की धर्मपत्नी श्रीमती सन्तरा देवी ने सभी के भोजन की समुचित व्यवस्था की। रात को ही स्वामी द्वय स्वामी इन्द्रवेशि विद्यापीठ आश्रम लौट आये।

23. आर्य समाज संजयनगर, गाजियाबाद के तत्वावधान में आयोजित अर्थववेदीय यज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी सम्मिलित हुए। यज्ञ के संयोजक श्री सेवाराम त्यागी एवं यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. योगेश शास्त्री सहित यज्ञ की व्यवस्था समिति ने स्वामी जी का जोरदार स्वागत किया और उनका प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

24. आर्य समाज सैक्टर–19, फरीदाबाद के तत्वावधान में आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम में 6 नवम्बर, 2024 को सायं स्वामी आर्यवेश जी वे स्वामी आदित्यवेश जी अम्बेडकर कालोनी, ओल्ड फरीदाबाद में सम्मिलित हुए और वहां आर्य समाज की प्रासंगिता पर प्रभावशाली व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान डॉ. गजराज सिंह, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के प्रधान श्री महेशचन्द्र आर्य, सभा के मंत्री श्री रघुवीर शास्त्री, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मकेन्द्र आर्य, श्री अशोक कुमार, श्री मदनलाल तनेजा, श्रीमती विमला ग्रोवर, श्री आर.डी. यादव आदि प्रमुख महानुभावों की गरिमामयि उपस्थिति रही।

25. युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्यतिथि के अवसर पर जाट धर्मशाला पलवल में आयोजित प्रेरणा सभा में 7 नवम्बर, 2024 को स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी सम्मिलित हुए। स्वामी प्रणवानन्द जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का संयोजन ब्र. राजदेव नैष्ठिक ने किया। इस अवसर पर श्री रघुवीर सिंह तेवतिया विधायक पृथला, श्री रमेश चन्द्र राणा, श्री बिजेन्द्र आर्य जनौली, पूर्व विधायक श्री दीपक मंगला, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री ठाकुर लाल आर्य, श्री रामपाल शास्त्री कार्यकारी अध्यक्ष मानव सेवा प्रतिष्ठान आदि की गरिमामयि उपस्थिति रही। स्वामी श्रद्धानन्द जी के संस्मरण सभी वक्ताओं ने सुनाये।

26. आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित वेद प्रचार सप्ताह में 29 नवम्बर, 2024 को प्रातः समाज सुधार सम्मेलन एवं सायंकाल वेद में राष्ट्र की अवधारणा सम्मेलन में स्वामी आर्यवेश जी के सारगर्भित व्याख्यान हुए। उनके साथ आचार्य ऊषर्बुद्ध जयपुर के प्रवचन तथा श्री मोहित शास्त्री के भजनों का भी कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम का संयोजन श्री मनोज कुमार चौहान ने किया। कार्यक्रम में स्वामी सूर्यवेश जी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, समाज के प्रधान श्री सरधाना, श्री सज्यवीर चौधरी, श्री नरेन्द्र पांचाल, श्री सुभाष गर्ग, श्री मोतीलाल गर्ग आदि की गरिमामयि उपस्थिति रही।

निर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

—स्व० डॉ० ज्ञानचन्द्र

स्यात् १८९६ या ९८ का सन् था। तब मेरे जीवन का बाल्यकाल ही था, जब मैंने श्री लाला मुन्शीराम जी जिज्ञासु को अपने श्री पूज्य पिता जी के साथ वार्ता करते देखा, उस दिन चर्चा हो रही थी गुरुकुल के लिये भूमि को। मेरे दोनों ही पूज्य भोजन करने बैठे थे, और चल रही थी वार्ता भी। कुछ ही दिनों के पश्चात् वह दोनों यात्रा की लिये गये और भूमि देख कर लौटे तो पिता जी हमारी पूज्य माता जी को सुना रहे थे, बड़ा भयंकर जंगल है– हे परमेश्वर, भगवान् बचावे ! पर वह तो वहां गुरुकुल बनाने का उसकी स्थापना करने का निश्चय ही कर बैठे हैं और सभा के लोगों के विरोध की भी चिन्ता नहीं कर रहे। थोड़े काल में बात पक्की हुई, गुरुकुल बन गया। निर्भीक मुन्शीराम ने बड़ी तत्परता से उस भयंकर जंगल में जहां जंगली पशुओं का निवास था महान् ज्ञान का संस्थान आरम्भ कर दिया, शिक्षा का एक अद्वितीय केन्द्र सथापित हो गया। सरकार और जनता दोनों स्तब्ध थे कि इस लोह पुरुष ने किस प्रकार संसार के सन्मुख प्राचीन आदर्श की स्थापना करने में कमाल कर दी है। वीर–धीर और गम्भीर मूर्ति ने अपनी बात को पूर्ण करके सिद्ध कर दिया कि भारत वर्ष को आर्यावर्त बनाने के लिये बढ़े परिश्रम और त्याग की आवश्यकता है।

(२) गुरुकुलोत्सव पर यात्री जाते समय तो नहीं, परन्तु लौटते समय तो सभी हरिद्वार अवश्य जाते, और वहां प्रायः उन दिनों पंडे लोगों की भिडंत हो ही जाती। अनेक बार की बात नहीं करता। एक बार जालन्धर निवासी मधुर गायनाचार्य श्री भगत मंगत राम जी अपने रसीले भजन बोलते हजारों आर्य नर–नारियों के साथ कीर्तन करते वहां के बाजार से चले जा रहे थे। यह देख हल्ला बोल दिया वहां के मूर्ख पंडों ने, निहत्थे आर्य यात्रियों पर, लाठियों से प्रहार हुआ सो हुआ। वहां के बाजार के एक प्रसिद्ध हलवाई ने अपनी उबलती घी की कढ़ाई में से डोरीयां भर–भर घी उछाल २ कर आर्यों पर डालना आरम्भ किया। इस घटना को मैंने जाकर महात्मा जी से वर्णन किया, सुनते ही एक वीर जनरेल की भान्ति घोड़े पर सवार हो घटनास्थल पर आ पहुँचे। पंड़े लोग उन्हें देख कर कांपने लगे।

(३) अमृतसर में अंग्रेज नौकर शाही ने जब अपनी

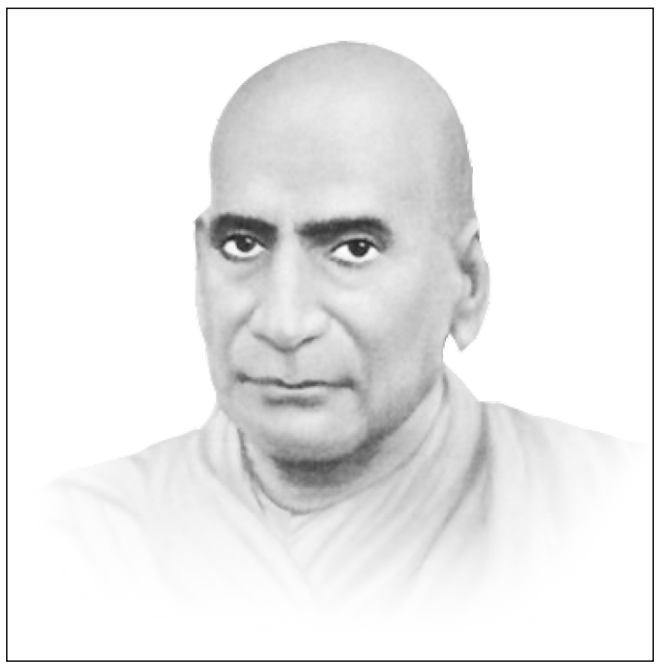

पाशविक शक्ति का प्रयोग कर नर नारियों और बालकों तक को गोलियों से भून डाला और जलियांवाला बाग में रक्त की होली खेल कर कायर डायर ने अपनी पश्चिमी सभ्यता का नंगा नाच नाच लिया, तब बड़े–बड़े वीर कहलाने वाले वहां प्रवेश नहीं कर पाये, चारों ओर आतंक छा रहा था, उस समय दयानन्द का यही प्यारा वीर महात्मा पंजाब की हतोत्साहित जनता को प्रोत्साहित करने के लिये पहुँचे थे और इस महान् वीर की वीरता के कारण ही तो कांग्रेस का ऐतिहासिक स्मरणीय अधिवेशन हो गया। उस समय मुझे स्वामी जी के साथ कई मास तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तब मुझे ज्ञान हुआ कि वह तो महान् बलवान् शक्ति हैं।

(४) उनके जीवन की घटनाओं का उल्लेख करने के लिये तो एक मोटा ग्रन्थ लिखा जा सकता है, क्योंकि उनका तो एक–एक क्षण इस प्रकार व्यतीत हुआ है जिसमें निर्भीकता भरी पड़ी है। चांदनी चौक देहली की घटना स्मरण आती है तो दिखाई देता है, गारेखे संगीनें ताने खड़े हैं तो आप छातीं ताने आगे बढ़े हैं। जालन्धर में एक बार रहेतियों की शुद्धि की गई तो नगर में हल चल मच गई। हिन्दुओं ने आर्यों को बिरादरी से पृथक करने की धमकी दी। तब इस वीर पुरुष ने बड़े बल से कहा कि आर्यों को तुम्हारी ऐसी बिरादरी की आवश्यकता नहीं जो मनुष्यों में भेद भाव करती हो। उन्होंने इस जात पात को कुचल के रख दिया।

आप रोगी थे, मैंने अमृतसर आर्य कुमार सभा के अधिवेशन में आने के लिये लिखा, वहां का उत्सव २० से २८ दिसम्बर १९२६ को था। स्वामी जी महाराज ने उत्तर दिया, ज्ञान एक दिन यहां आओ, और यदि मैं फिर अच्छा हो गया तो आ ही जाऊँगा। मैं १६ दिसम्बर को देहली पहुँचा। यह स्वामी जी से मेरा अन्तिम मिलन था। २३ तारीख को आपके पास एक आततायी यवन ने आकर कहा मुझे शुद्ध कर लीजिये, मुझे पानी दीजिये, रक्त के प्यासे ने पानी पिया, पर प्यास न बुझी, संन्यासी के सीने से रक्त की धार बहा कर पी। वीर श्रद्धानन्द ने वीरता पूर्वक अपने प्राण आर्य जाति पर न्योछावर कर दिये।

उस दिन श्रद्धानन्द ने अपनी पूर्ण श्रद्धा से अपने रक्त द्वारा वैदिक धर्म की वाटिका को सींचा तो क्रूर हृदय लोगों ने अपनी क्रूरता का परिचय दिया। हसन निजामी ने एक लेख लिखा 'फ्राम देहली टू अहमदाबाद' जिसमें वैदिक धर्म के इस अद्वितीय वीर पर कटु कटाक्ष किये। उन दिनों मैं अमृतसर से एक मासिक पत्रिका उर्दू में निकालता था जिसका नाम ''वर्तमान'' था। मैंने उस लेख का उत्तर उसमें प्रकाशित किया, **''सैरे दोजख''** बस फिर क्या था यवन कैम्प में खलबली मची, अंग्रेज को विवश किया गया, मेरे विरुद्ध अभियान चला कर हाई कोर्ट में **'रंगीला रसूल'** का स्थानावत् टैस्ट केस बनाया गया। जांच तो क्या होनी थी, अंग्रेज ने उनको खुश करना था किया, हमें दण्ड दिया गया। मैंने अपने जीवन में अपने उस परम तेजस्वी वीर से सीखा कि धर्म पथ में आने वाले संकटों को हंसी–हंसी सहन करें, कभी भयभीत नहीं होना, और आगे ही आगे बढ़ते रहना चाहिये।

पृष्ठ 6 का शेष

आर्य समाज नोएडा का वार्षिकोत्सव समारोह भव्य के साथ सम्पन्न हुआ

तथा औरों की उन्नति में अपनी उन्नति समझने की प्रेरणा वैदिक संस्कृति से ही मिलती है। अतः यह संस्कृति संसार के समस्त मानवों के उपकार एवं कल्याण की भावना से ओत–प्रोत है। इसी के आधार पर वैदिक संस्कृति का महाभारत से पूर्व पूरे विश्व में साम्राज्य रहा और भारत पूरे विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित रहा। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती मधु भसीन, मंत्राणी श्रीमती गायत्री मीणा, गुरुकुल के आचार्य डॉ. जयेन्द्र एवं कै. अशोक गुलाटी ने स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया।

दिनांक 8 दिसम्बर, 2024 को आर्य समाज सेक्टर–33, नोएडा का त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव समारोह वैदिक विद्वान डा. जयेंद्र आचार्य के ब्रह्मत्व में 51 कुण्डीय विश्वशांति सौहार्द महायज्ञ सोल्लास सम्पन्न हुआ। मुख्य यज्ञमान श्री हरिशंकर सिंह, श्री अशोक अरोड़ा, श्री पुनीत निरुपमा मल्होत्रा, वंदना एवं दीपक खोसला, प्रतीक एवं गगन भसीन, आशीष कठपालिया, सौरभ कठपालिया सपरिवार रहे। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे केंद्रीय केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य के समारोह में आगमन पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने कहा था कि कोई कितना भी करे स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम होता है। आज राष्ट्रवाद की जो बात चल रही है उसकी अवधारणा को जन्म देने वाले स्वामी दयानंद थे। महर्षि दयानन्द जी से प्रेरणा लेकर अनेकों नौजवानों ने आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे।

प्रांतीय अध्यक्ष श्री प्रवीण आर्य ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर खेद प्रकट करते हुए मोदी सरकार से मांग की कि बांग्लादेश पर दबाव बनाकर हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार को रोकें।

विशिष्ठ अतिथि नवाब सिंह नागर (पूर्व विधायक) ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुकुल हमें स्वयं संस्कारित होकर दूसरों को संस्कारित करना सिखाता है। उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के उपकारों पर विस्तार से प्रकाश डाला। यज्ञ के महत्व की चर्चा करते हुए बताया कि यज्ञ से ही मानव का निर्माण हो सकता है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. वेदपाल ने कहा कि महर्षि के उपकार नारी जाति पर बहुत हैं। स्त्री शिक्षा महर्षि दयानंद सरस्वती की देन है। साहस, स्वराज्य प्राप्ति की प्रेरणा, सामाजिक उत्थान, ब्रह्मचर्य, गौरक्षा का महत्व बताते हुए गौकरुणा निधि पर प्रकाश डाला और गुरुकुल शिक्षा का महत्व बताया। गुरुकुल में ही बलिदान की प्रेरणा मिलती है, गुरुकुलों से निकले छात्रों ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़–चढ़ कर भाग लिया था। आर्य समाज के गुरुकुलों में राष्ट्र के प्रति समर्पित होने का संकल्प कराया जाता है।

विशिष्ट अतिथि श्री नरेन्द्र वेदालंकार ने कहा की महर्षि दयानंद सरस्वती जी को ही महापुरुषों में युग प्रवर्तक कहा जाता है। गुरुकुल शिक्षा के द्वारा ही नैतिक शिक्षा को बढ़ाया जा सकता है। स्वराज के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानंद जी हैं। देश की आजादी में प्रेरित करने वालों में महर्षि दयानंद जी का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक भानु प्रकाश शास्त्री एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने आधुनिक साज बाज पर महर्षि दयानंद सरस्वती यशोगान के गीतों से श्रोताओं को झूमा दिया।

इस अवसर पर सर्वश्री वीर प्रताप अरोड़ा, गायत्री मीना, कर्ण सिंह शास्त्री, अग्निदेव, ब्रह्मचारी हर्ष, शिवम् सोनी, अमित आदि ने भी अपने–अपने विचार रखे।

समारोह में प्रमुख रूप से सर्वश्री वेद प्रकाश अरोड़ा, यज्ञवीर चौहान, डॉ. प्रमोद सक्सेना, सत्यपाल आर्य, चंद्रावती आर्या, ओमवती गुप्ता, ओमकार शास्त्री, प्रवीण आर्य एवं सीमा जी आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. जयेंद्र आचार्य व मंत्री गायत्री मीना ने किया। प्रधाना मधु भसीन, कैप्टन अशोक गुलाटी ने सभी का आभार व्यक्त किया। शांतिपाठ एवं ऋषिलंगर के साथ समारोह संपन्न हुआ।

विशिष्ठ अतिथि नवाब सिंह नागर (पूर्व विधायक) ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुकुल हमें स्वयं संस्कारित होकर दूसरों को संस्कारित करना सिखाता है। उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के उपकारों पर विस्तार से प्रकाश डाला। यज्ञ के महत्व की चर्चा करते हुए बताया कि यज्ञ से ही मानव का निर्माण हो सकता है।

विशिष्ट अतिथि श्री नरेन्द्र वेदालंकार ने कहा की महर्षि दयानंद सरस्वती जी को ही महापुरुषों में युग प्रवर्तक कहा जाता है। गुरुकुल शिक्षा के द्वारा ही नैतिक शिक्षा को बढ़ाया जा सकता है। स्वराज के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानंद जी हैं। देश की आजादी में प्रेरित करने वालों में महर्षि दयानंद जी का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक भानु प्रकाश शास्त्री एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने आधुनिक साज बाज पर महर्षि दयानंद सरस्वती यशोगान के गीतों से श्रोताओं को झूमा दिया।

इस अवसर पर सर्वश्री वीर प्रताप अरोड़ा, गायत्री मीना, कर्ण सिंह शास्त्री, अग्निदेव, ब्रह्मचारी हर्ष, शिवम् सोनी, अमित आदि ने भी अपने–अपने विचार रखे।

समारोह में प्रमुख रूप से सर्वश्री वेद प्रकाश अरोड़ा, यज्ञवीर चौहान, डॉ. प्रमोद सक्सेना, सत्यपाल आर्य, चंद्रावती आर्या, ओमवती गुप्ता, ओमकार शास्त्री, प्रवीण आर्य एवं सीमा जी आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. जयेंद्र आचार्य व मंत्री गायत्री मीना ने किया। प्रधाना मधु भसीन, कैप्टन अशोक गुलाटी ने सभी का आभार व्यक्त किया। शांतिपाठ एवं ऋषिलंगर के साथ समारोह संपन्न हुआ।

प्रेरक जीवन के धनी स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ. महेश वेदालंकार

इस देश को सद्ग्रन्थों और महापुरुषों की लम्बी विरासत व परम्परा मिली। ये प्रेरक सद्ग्रन्थ तथा पुण्य आत्माएँ जीवन जगत की प्रकाश स्तम्भ हैं। ये ही भूली–भटकी मानव जाति को सन्मार्ग दिखाते हैं। इसी बलदानी परम्परा में स्वनाम धन्य स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान और देश, धर्म, संस्कृति के रक्षक उनके कार्यों व आदर्शों को संसार श्रद्धा व सम्मान से स्मरण करता है। वे श्रद्धा, त्याग, सेवा, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति थे। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व आकर्षक व सराहनीय था। उनकी तप, त्याग, तपस्या, सेवा, वीरता, दृढ़ता, राष्ट्र प्रेम आदि वन्दनीय है। उनकी गुरुभक्ति स्पृहणीय है। उनके कार्य अनुकरणीय व प्रशंसनीय हैं। उनका बलिदान प्रेरणीय है, उनका जीवन चरित्र पठनीय है। उनकी दुर्गुण व दुर्व्यसनों से मुक्ति प्रेरक व असाधारण है। उनकी देश, धर्म, जाति तथा वैदिक धर्म की सेवा स्लाघनीय है। उनका सर्वस्व समर्पण स्वर्णिम है। उनका संगीनों के सामने सीना खोलकर खड़े हो जाना नमनीय है। उनका सम्पूर्ण जीवन अतुलनीय है।

जब स्वामी श्रद्धानन्द जी के पूर्व जीवन का सिंहावलोकन करते हैं तो एक ऐसे व्यक्ति का शब्द चित्र बनता है जिनमें कई बुराईयाँ, नास्तिकता, खान–पान की अपवित्रता, आचरण की मलीनता और भोग–विलास की प्रधानता थी। वे धर्म, कर्म, ईश्वर विश्वास, स्वाध्याय, सत्संग आदि से दूर रहते थे। घटना क्रम बदला। ऋषिवर देव दयानन्द का चुम्बकीय साक्षात् दर्शन, तर्क ज्ञानयुक्त श्रवण और वार्तालाप से ज्ञान चक्षु खुल गये। जीवन की धारा बदल गई। पूर्व सन्मार्ग के संस्कार जागृत हो उठे। प्रभु कृपा हुई, जीवन का रंग–ढंग ही बदल गया। पतित जीवन से प्रेरक और सन्मार्ग के जीवन की ओर चल पड़े। यह हृदय परिवर्तन से ही सम्भव हुआ। यही प्रभु की कृपा कहलाती है। परमेश्वर जिनका कल्याण चाहता है उनके दुर्गुण, दुर्व्यसन हटाकर भ्रदभाव जागृत कर देता है। आज हमारे जीवनों में अनेक दोष, बुराईयाँ, दुर्गुण, दुर्व्यसन, अहंकार, ईर्ष्या–द्वेष आदि घर किये बैठे हैं जो हमें खोखला कर रहे हैं। हमारी सबसे बड़ी भूल व गलती है कि हम अपने दोषों, कमियों और गलतियों को देखते, मानते तथा जानते नहीं हैं। अपने को निर्दोष और दूसरों को दोषी मान एवं समझ रहे हैं। व्यक्ति का सुधार, निर्माण, उत्थान व कल्याण तभी होता है जब वह अपने दोषों, बुराईयों को महसूस करता है। मुंशीराम ने अपनी कमियों, अवगुणों को महसूस किया। छोड़ने की इच्छाशक्ति और संकल्प किया। वे महामानव श्रद्धानन्द बन गये। सीखने, सम्भलने, सुधरने तथा श्रेष्ठ बनने का मुंशीराम से बढ़कर प्रेरक उदाहरण कहीं न मिलेगा। मुंशीराम श्रद्धानन्द बन सकते हैं? तो हम क्यों नहीं श्रेष्ठ, महान एवं प्रेरक बन सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन हमें बहुत कुछ कह रहा है। बात कहने की नहीं करने की है। 'कल्याण मार्ग का पथिक' उनकी आत्मकथा सभी के लिए पठनीय एवं प्रेरणाप्रद है।

स्वामी श्रद्धानन्द वाक्शूर नहीं है, कर्मशूर थे। जो कहा उसे कर दिखाया। उनके जीवन का कथनी, करनी का पक्ष संसार को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, नास्तिकता से आस्तिकता की ओर, अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर चलने व बढ़ने की शिक्षा एवं प्रेरणा देता रहेगा। ऐसी श्रद्धा, आस्था, विश्वास, व्रती संकल्प, कर्मठ चरित्र इतिहास में दुर्लभ मिलता है। जो इतनी गिरावट से इतनी ऊँचाई पर चढ़ा हो कि जिसने जीवन की सर्वोच्च पदवी संन्यासी पद पाया हो। जिसने स्वर्णिम इतिहास बनाया हो और इतिहास में लम्बी लकीर खींच दी हो, जिसने घनेघोर जंगल में गुरुकुल का दिया जलाया हो, जिसने शुद्धि आन्दोलन का चक्र चलाया हो और अन्त में शुद्धि मिशन के लिए बलिदानी बन गये जिसने दुर्दात डाकुओं को भी तप, त्याग, साहस, वीरता आदि से अपनी ओर आकर्षित कर लिया हो जो हिंसक जन्तुओं को भी अपने सान्निध्य में बैठाने का साहस रखता हो वह इतिहास पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द थे।

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द जी के सच्चे अर्थ में उत्तराधिकारी थे। ऋषिवर ने जो वाणी, लेखनी और आर्य समाज के माध्यम से जो सिद्धान्त, विचार, आदर्श तथा वैदिक चिन्तन दिया, उन्हें इस महापुरुष ने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियात्मक साकार रूप दिया। वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पुनरूद्धारक थे। उनका जीवन कठिनाईयों, संघर्षों, चुनौतियों और विरोधों में निकला। किन्तु उन्होंने कभी हार नहीं मानी। चरैवेति–चरैवेति के मूल मन्त्र को कभी नहीं छोड़ा। अपने गुरु का मान बढ़ाया। वैदिक धर्म की ध्वजा को ऊँचा उठाया। गुरुकुल

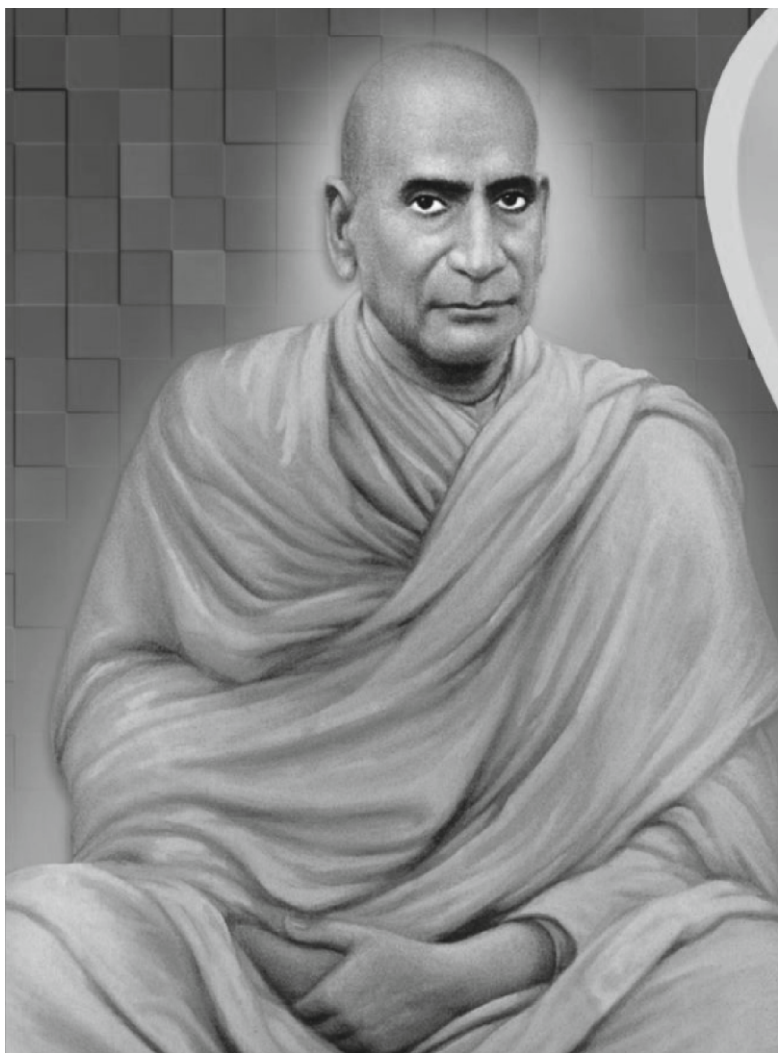

कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मारक है उनके जीवन की सम्पूर्ण पूंजी है। किन्तु आर्य समाज का गौरव वह स्मारक आज ढह रहा है। विकृत और मूल से हट रहा है। हम सब बेखबर हैं।

इतिहास साक्षी है – 'भूतो न भावी'। स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे महापुरुष थे जिन्हें जामा मस्जिद से वेद मन्त्र बोलकर हिन्दू–मुस्लिम एकता का संदेश देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चांदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए गोरखा सिपाहियों के सामने सीना तानकर खड़े हो जाना और कहना चलाओ मेरे सीने पर गोलियाँ? स्वामी श्रद्धानन्द जैसा निडर, निर्भीक, देशभक्त साहसी ही कह सकता था। शुद्धि आन्दोलन में प्राणों का खतरा मोल लेने वाले हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। यही शुद्धि चक्र अन्त में उनके बलिदान का कारण बना। स्वामी जी में अपार तप, त्याग, सेवा, साहस, वीरता, बलिदान आदि के भाव कूट–कूट कर भरे थे। उनकी शिक्षा, धर्म, संस्कृति, शुद्धि, राजनीति, वैदिक धर्म प्रचार आदि के क्षेत्र में अनूठे वीर पुरुष के रूप में पहचान थी। उनके बलिदान पर जो श्रद्धांजलियाँ और उद्गार देश–विदेश से आये थे उससे उनके सहज ही व्यक्तित्व एवं कृतित्व का पता चलता है। किसी ने उन्हें राष्ट्र निर्माता, किसी महान स्वतंत्रता सेनानी, किसी ने पथ–प्रदर्शक, किसी ने वीरता और बलिदान की मूर्ति, किसी ने गुरुकुल शिक्षा का पुनरूद्धारक, किसी ने हिन्दू जाति का चौकीदार, किसी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता का पक्षधर आदि अनेक विशेषणों और विशेषताओं से सम्मानित और स्मरण किया था। उनकी स्मृति और कार्यों को अजर–अमर बनाये रखने के लिए प्रतिवर्ष श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आता है। जलसे, जलूस, लंगर, फोटो–माला, स्वागत, नारों आदि में सिमट कर रह जाता है। कहीं वैदिक मिशनरी स्प्रिट रचनात्मक, निर्माणात्मक, प्रभावपूर्ण और लोगों को जोड़ने वाली चेतना नजर नहीं आ रही है। सर्वत्र निराशा, तटस्थता, स्थिरता और किं कर्त्तव्य विमूढ़ता छा रही है जबकि आज के वातावरण व हालात में जीवन जगत को आर्य विचारधारा की अत्यन्त आवश्यकता है। वैदिक धर्म ही संसार को सीधा, सच्चा व सरल मार्ग दिखा सकता है। आर्य समाज की पीड़ा है कि तेजी से संन्यासी, विद्वान, वक्ता, धर्माचार्य, भजनोपदेशक, प्रचारक, समर्पित सेवा भावी कार्यकर्ता, सदस्य आदि घट रहे हैं और जा रहे हैं। नये बन नहीं रहे हैं। इस दिशा में बनाने की भावना व ईमानदारी से योजना कार्यक्रम, संकल्प, प्रकल्प भी नहीं हो रहे हैं। केवल प्रस्ताव, मीटिंगों, वादों, भाषणों आदि से बात नहीं बनेगी। सच्चाई एवं ईमानदारी से आर्य संगठनों, संस्थाओं, गुरुकुलों, समाजों आदि को आत्मशुद्धि, आत्मचिन्तन, चुनाव प्रक्रिया, पदों की आयु और समय सीमा आदि का पुनर्मूल्यांकन करने की तुरन्त जरूरत है। सभी जगह जो होना चाहिए वह नहीं हो रहा है, जो नहीं होना चाहिए वह हो रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का यह प्रेरक अनुभव सिद्ध संदेश कह रहा है कि आर्य समाज को सेवकों की जरूरत है, नेताओं की नहीं। आज आर्य समाज की दुःखद त्रासदी है कि सभी नेता बनना चाह रहे हैं सेवक कोई नहीं बनना चाहता है। सब ऊपर बैठना चाहते हैं नीचे कोई नहीं रहना व बैठना चाहता है। झगड़े, पद–प्रतिष्ठा पैसे के लिए हो रहे हैं। किसी को दयानन्द, वेद प्रचार, आर्य समाज के प्रचार–प्रसार की बेचैनी, दर्द और झटपटाहट नहीं सता रही है। सब जगह मूल में भूल हो रही है। केवल नारों, जयकारों तथा झण्डों से बात नहीं बनेगी। यदि ऋषि और आर्य समाज को अजर–अमर रखना और आगे बढ़ना है तो नियम, सिद्धान्तों, विचारों व संगठन को अविलम्ब एकता, अनुशासन में लाना तथा झगड़ों विवादों से बचाना होगा। विवादों से बात नहीं संवादों से बात बनेगी। सर्वत्र लम्बे समय से एकाधिकार की भावना, पदों को न छोड़ने का हठ, अहंकार और दुराग्रह आर्य समाज को खोखला, कमजोर व संकुचित कर रहा है।

आर्यों! उठो, जागो अपने स्वरूप को समझो! श्रद्धानन्द जी का बलिदान हमें पुकार रहा है। चिन्ता नहीं चिन्तन करो। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए जीवन बलिदान कर दिया। क्या हमें ऋषि मिशन व आर्य समाज की एकता, संगठन व उन्नति के लिए स्वार्थ, अहंकार और पदों को नहीं छोड़ सकते हैं? पदों से कदों को ऊँचा करो। कहाँ व्यर्थ की बातों, ईर्ष्या, द्वेष तथा विवादों में उलझ रहे हैं। ऋषि की आत्मा दुःखी होकर हमें क्या कह रही होगी। क्या हमने इसीलिए आर्य समाज बनाया था, यह बलिदान पर्व हमें बहुत कुछ कह रहा है। आईये! विचारें चिन्तन करें।

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व

कीर्तिर्यस्य स जीवति

19 दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल

– जगतराम आर्य

19 दिसम्बर, 1927 ई., सोमवार प्रातःकाल छः बजे गोरखपुर जेल से फांसी के तख्ते की ओर जाते हुए शहीद कह उठाः

''मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।''

तत्पश्चात् शहीद ने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की- ''मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।''

इसी प्रकार 16 दिसम्बर, 1927 को उन्होंने लिखाः-

''हे ईश! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो, कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।''

यह शहीद थे पं. रामप्रसाद बिस्मिल। वे इन्हीं शब्दों को गुनगुनाते हुए फांसी पर चढ़ गए। वे सच्चे देशभक्त थे, साहसी थे, आर्यवीर थे। वे देश के चरणों पर बलिदान होने के लिए एक तारे की भांति उदित हुए थे। एक तारे की भांति ही वे टूट गए। उनकी उदय और अस्त की कहानी एक मंत्र की तरह प्रेरक है, शक्तिदायक है। युग आएंगे और चले जाएंगे, पर उनके बलिदान की गाथा सदा प्रेरणा देती रहेगी, सदा एक पवित्र मंत्र की तरह रगों में शक्ति का संचार करती रहेगी।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून 1897 ई. को पं. मुरलीधर तिवारी (शाहजहांपुर निवासी) के यहां हुआ था। मुरलीधर ऊँचे डीलडौल के व्यक्ति थे। घर की स्थिति सामान्य थी। वे बड़े साहस और धैर्य के साथ अपनी गृहस्थी का संचालन करते थे।

बिस्मिल जी की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में सम्पन्न हुई। उन्हें एक मौलवी साहब पढ़ाया करते थे। पर उनका मन पढ़ने लिखने में बिल्कुल नहीं लगता था। वे बड़े उद्दंड थे। न स्वयं पढ़ते थे न दूसरे लड़कों को पढ़ने देते थे। ज्यों-ज्यों वे बड़े होते गए, उनकी उद्दंडता बढ़ती ही गई। कभी-कभी अपनी बुरी आदतों के कारण उन्हें अपने पिता के द्वारा अधिक दंडित भी होना पड़ता था।

पर संयोग की बात, एक दिन शाहजहांपुर में आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता सोमदेव जी का आगमन हुआ। बिस्मिल जी उनके सम्पर्क में आए, उनसे प्रभावित हुए और उनके पास आने जाने लगे। सोमदेव जी के कारण बिस्मिल जी के जीवन की कायापलट हो गई। वे बुरी आदतों को छोड़कर ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने लगे, प्राणायाम करने लगे। आर्यसमाजी नेताओं के उपदेश सुनने लगे। आर्य समाज मंदिर में जाकर यज्ञ और हवन आदि करने लगे। ऋषि दयानन्द के लिखे हुए अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करने लगे। इससे बिस्मिल जी के शरीर और हृदय, दोनों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राणायाम के द्वारा उनका शरीर सुगठित हो गया। उनके शरीर के अंग-अंग में स्फूर्ति का सागर उमड़ने लगा। उन्होंने घुड़सवारी, तैराकी और साइकिल चलाने में अनोखी दक्षता प्राप्त की। दौड़ने और पैदल चलने में वे बड़े तेज थे। साठ-साठ मील तक पैदल चले जाते थे, पर उनमें नाममात्र की भी थकावट नहीं पैदा होती थी। शरीर की ही भांति उनका हृदय भी अधिक बलवान हो गया था। ऋषि दयानन्द की देशभक्ति का बिस्मिल जी पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। वे देश की बातें सोचने लगे। देश के लिए उनके हृदय में भक्ति पैदा हो गई। वे देशभक्तों के

चरित्र पढ़ने लगे, देश प्रेम से भरी हुई कविताओं का सस्वर पाठ करने लगते, तो वातावरण में एक रस सा पैदा हो जाता था।

बिस्मिल जी को ऊँची शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नहीं प्राप्त हो सका था। शिक्षा के नाते उन्होंने सामान्य रूप से उर्दू और अंग्रेजी पढ़ी थी। उन्होंने एन्ट्रेन्स की परीक्षा तो नहीं पास की थी, पर एन्ट्रेन्स तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी। उन्होंने स्वतंत्र रूप से पढ़कर बाद में उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उर्दू में वे शायरी करते थे। उनकी कविताएं बड़ी प्रभावपूर्ण और जोशीली होती थीं। वे एक अच्छे वक्ता और सुलेखक भी थे। उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की है। उर्द और अंग्रेजी के अतिरिक्त उन्हें बांग्ला और हिन्दी का भी ज्ञान था।

ऋषि दयानन्द के जीवन और सोमदेव जी की प्रेरणा से ही बिस्मिल जी के हृदय में देश प्रेम का अंकुर फूटा। जिन दिनों वे नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, उन्हें स्वयंसेवक के रूप में सेवा समिति में काम करने का अवसर मिला। सेवा समिति का कार्य करते हुए उनकी दृष्टि परसेवा की ओर आकर्षित हुई। परसेवा से और भी अधिक आगे बढ़कर उनकी दृष्टि देश सेवा पर गई। देश की गुलामी से उनके हृदय में दर्द पैदा होने लगा। वे हृदय से यह अनुभव करने लगे कि व्यक्ति का दुःख देश का दुःख अंग्रेज सरकार के कारण है। फलतः वे अंग्रेज सरकार को विनष्ट करने के सम्बन्ध में सोच विचार करने लगे।

इन्हीं दिनों बिस्मिल जी को स्वर्गीय गेंदालाल दीक्षित से क्रांतिकारी दल का पता लगा। दीक्षित जी के दल का केन्द्र मैनपुरी था। बिस्मिल जी की अवस्था उन दिनों केवल उन्नीस वर्ष की थी और वे हाई स्कूल में पढ़ रहे थे, पर वे इसी कच्ची उम्र में ही दीक्षित जी के दल में सम्मिलित हो गए। बिस्मिल जी अपनी कर्मठता और लगन से थोड़े ही दिनों में दीक्षित जी के दल के प्रमुख सदस्यों में से बन गए। बंगाल के क्रांतिकारियों से भी उन्होंने संपर्क स्थापित किया। वे बड़ी लगन से अपने दल के लिए अपने दल के साथियों के लिए अस्त्र-शस्त्र और धन एकत्र करने लगे। उनके अस्त्र-शस्त्र और धन संग्रह के सम्बन्ध में कई रोचक और साहसपूर्ण कहानियां कही जाती हैं।

बिस्मिल जी डकैतियों के द्वारा भी दल के लिए धन एकत्र किया करते थे। वे सरकारी खजानों, डाकखानों और बैंकों को लूटने के लिए भी प्रोत्साहन दिया करते थे। दल के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से ही उन्होंने 1925 ई. में 9 अगस्त को काकोरी में ट्रेन डकैती करके अपने अद्भुत साहस का परिचय दिया था।

काकोरी लखनऊ के पास एक स्टेशन है। 1925 ई. की 9 अगस्त का दिन था। संध्या के लगभग 8 बज रहे थे। ट्रेन हरदोई से लखनऊ जा रही थी। उस पर सरकारी खजाना था बिस्मिल जी को पहले से ही यह बात ज्ञात हो चुकी थी। उन्होंने पहले ही अपने साथियों से विचार-विमर्श करके उस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई थी।

यद्यपि यह सारा काम बड़ी चतुराई और होशियारी के साथ किया गया, फिर भी सरकारी जासूस विभाग को पता चल ही गया। परिणामस्वरूप गिरफ्तारियां की जाने लगीं। एक-एक करके ट्रेन डकैती में सम्मिलित क्रांतिकारी बन्दी बनाए जाने लगे। बिस्मिल जी भी 25 दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिए गए।

बिस्मिल जी और उनके साथियों पर मुकदमा चलाया गया। लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला, पर कुछ फल न निकला। बिस्मिल जी को फांसी की सजा सुनाई गई। फांसी के पहले बिस्मिल जी के माता-पिता जेल में उनसे मिलने के लिए गए। माता-पिता के साथ उनका छोटा भाई भी था। बिस्मिल जी ने जब मां को देखा, तो उनकी आंखे डबडबा गई। अश्रु बूंदे रह-रहकर आंखों से टपकने लगीं। बिस्मिल जी की आंखों में अश्रु बूंदे देखकर उनकी माता जी बोल उठीं- ''मैं समझती थी, तुमने अपने आप पर विजय प्राप्त की है, किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवनपर्यन्त देश के लिए आसूं बहाकर अब अन्तिम समय में मेरे लिए रोने बैठे हो! इस कायरता से क्या होगा? तुम्हें वीर की तरह हंसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूंगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने में मेरा पुत्र देश की वेदी पर अपने प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा करना था। उसके बाद तुम देश की चीज बन गए थे, सो उसके काम आ गए। मुझे जरा भी दुःख नहीं है।''

बिस्मिल जी अपनी मां के ओजस्वी शब्दों को सुनकर चुप न रह सके। वे आंसू पोछते हुए बोल उठे- ''मां, तुम मेरी मां हो। तुम मेरी जननी होकर भी नहीं समझ सकीं। मां, मैं मृत्यु से भयभीत होकर नहीं रो रहा हूँ। जिस प्रकार यदि घी को आग के पास कर दिया जाए तो वह पिघल उठता है, उसी प्रकार मां, तुम्हें देखकर मेरी आंखों से कुछ अश्रुबूंदें निकल पड़ी। विश्वास रखो मां, मैं मृत्यु से संतुष्ट हूं, पूर्णरूप से संतुष्ट हूँ।''

गोरखपुर जेल में 1927 ई. की 19 दिसम्बर का प्रातः काल था। बिस्मिल जी तीन बजे ही उठ पड़े। उन्होंने शौचादि से निवृत्त होकर संध्या की, हवन यज्ञ किया। फिर वे गुनगुनाते हुए फांसी के तख्ते की ओर चल पड़े। वे गुनगुनाते हुए ही फांसी के फन्दे पर चढ़ गए। आर्यसमाजी होने के नाते उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ। उन्होंने फांसी के तख्ते पर चढ़कर जोर से आवाज ऊँची की- ''अंग्रेज सरकार का नाश हो, अंग्रेज सरकार का नाश हो!''

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2024-26
Licence to Post without Pre-Payment of Postage. U (C)-289/2024-26

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

नशा देश एवं समाज के माथे पर कलंक है – स्वामी ओमवेश

नशाबन्दी की राष्ट्रीय नीति बनाये केन्द्र सरकार – स्वामी आदित्यवेश

मानसिकता बदलने से बचेंगी बेटियाँ – पूनम आर्या

महिला सशक्तिकरण के लिए महर्षि दयानन्द जी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा – प्रवेश आर्या

प्रो. विट्ठलराव जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर पर मात्र औपचारिक आयोजन करने से कुछ नहीं होगा बल्कि महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को वैज्ञानिक संदर्भ में लोगों के समक्ष रखना अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि यदि डारविन का विकासवाद का सिद्धान्त गलत है तो हमें वेदाधारित सृष्टि उत्पति का सिद्धान्त तर्क एवं विज्ञान के आधार पर प्रस्तुत करना होगा। उन्होंने बताया कि दुनिया के वैज्ञानिकों ने बड़े परिश्रम के साथ खोज की। इस दुनिया का निर्माण गॉड पार्टिकल से हुआ है। इसी प्रकार से अन्य सारे विषयों पर हमें भी अपनी विचारधारा को तर्क के आधार पर विज्ञान सम्मत तरीके से उपस्थित करना होगा तभी सही अर्थों में हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जयन्ती मनाने में सफल होंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज प्रारंभ से ही देश का एक सजग प्रहरी रहा है।

उत्तर प्रदेश के पूर्व गन्ना मंत्री व वर्तमान में विधायक स्वामी ओमवेश जी ने कहा कि नशा समाज के माथे पर कलंक है। इसके विरुद्ध आर्य समाज की मुहिम महत्वपूर्ण है। केन्द्र सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों को आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे नशाबन्दी आन्दोलन को ध्यान में रखते हुए इस पर कठोर कानून बनाकर पूरे देश में नशाबन्दी लागू करनी चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी ने केंद्र सरकार से देश में पूर्ण नशाबंदी लागू करने की राष्ट्रीय नीति घोषित करने की मांग रखी। उन्होंने कहा कि जब तक नशाबन्दी को लेकर केन्द्र सरकार कोई राष्ट्रीय नीति घोषित नहीं करेगी तब तक नशा बन्द नहीं हो सकता। वर्तमान समय में जिस प्रकार से गुजरात व बिहार में शराबबन्दी तो लागू है परन्तु आये दिन समाचार में पढ़ने को मिलता है कि इतने लोगों की शराब पीने से मृत्यु हो गई। शराब तथा अन्य नशों की तस्करी बढ़ रही है। इसलिए हम देश के प्रधानमंत्री से मांग करते हैं कि पूरे भारतवर्ष में एक साथ नशाबन्दी की राष्ट्रीय नीति घोषित करके देश को नशामुक्त बनाया जाये। भारत की भूमि को नशामुक्त, भ्रष्टाचारमुक्त, भेदभावमुक्त, जातिवादमुक्त, सम्प्रदायमुक्त बनाकर ही विश्व गुरु बनाया जा सकता है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्य ने कहा कि बेटियां नारे बदलने से नहीं, मानसिकता बदलने से बचेंगी। आज बेटियों के नाम पर विभिन्न नारे लगाए जाते हैं, लेकिन उनके प्रति विकृत मानसिकता कम नहीं हुई है। आज भी लड़की को दूसरे दर्जे का माना जाता है। आज भी छेड़छाड़ की घटना, दहेज उत्पीड़न आदि आम बात है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्य ने कहा कि हमारा प्रयास केवल लिंगानुपात के आंकड़े सुधारना नहीं, बल्कि लड़कियों के प्रति मानसिकता व व्यवहार बदलना है।

कार्यक्रम के संयोजक नशाबंदी समिति के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि हरियाणा में जिलास्तर पर शराबबंदी समिति भी बनाई जाएगी, जो लोगों को जागरूक करने का अभियान तेज करेगी। गांव में ठेके न खोलने के लिए जागरूक करेगी। स्वामी जी ने कहा कि देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने का प्रस्ताव तैयार कराकर उस पर ग्राम सभाओं तथा ग्राम पंचायतों के हस्ताक्षर करवाकर सरकार के पास भेजी जायेगी तथा हरियाणा में जिला स्तर पर शराबबंदी समितियां बनेंगी।

इंडस स्कूल के निदेशक श्री सुभाष श्योराण ने कहा कि आर्य समाज द्वारा देश में जागरूकता का निरन्तर अभियान चलाया जा रहा है, आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे इस प्रकार के आन्दोलनों में मैं अपना सहयोग हमेशा देता रहूंगा। आज युवाओं को शिक्षा के साथ–साथ संस्कारित करने की भी जरूरत है।

लोकशक्ति मंच हरियाणा के प्रधान श्री धर्मबीर सरपंच ने कहा कि समाज में सबसे ज्यादा आवश्यकता युवाओं के निर्माण की है। लेकिन दुर्भाग्य है कि कोई भी राजनीतिक व सामाजिक संगठन इस ओर प्रयास नहीं कर रहे हैं।

श्री रणधीर सिंह रेढू ऐडवोकेट ने कहा कि आर्य समाज संगठन युवाओं के निर्माण की पहल करता है जिसमें सभी को सहयोग करना चाहिए।

इस अवसर पर सर्वश्री इंद्रजीत आर्य, मा. देवेन्द्र सहारन, करण सिंह आर्य, सज्जन सिंह राठी, देवेंद्र, महिपाल ढिल्लो, सूरजमल सिंह आर्य, सत्यवीर आर्य कैथल, अशोक वर्मा सिरसा, रामपाल महेंद्रगढ़, केवल आर्य, रघुबीर भूरा, जगवीर पांचाल, बिजेंद्र आर्य, रामनिवास बूरा, सुरेश शर्मा आदि कार्यक्रम में प्रभावशाली उपस्थिति रही और सभी लोगों ने दिल खोलकर अपना सहयोग प्रदान किया।

प्रांतीय आर्य सम्मेलन के अवसर पर आर्य समाज की ओर से जिन आर्य कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया उनके नाम उल्लेखनीय हैं सर्वश्री सतपाल कुंडू, सूरत सिंह, रामधारी खटकड़, दयानन्द अहिरका, देवेंद्र पांचाल, बिजेंद्र घोघड़ियां, सूबे सिंह खोखरी, सतपाल जाजवान, सुदेश कुमारी मुख्य रहे। अन्त में स्वामी रामवेश जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया तथा उनके उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घायुष्य की कामना की गई। प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।